सांध्य दैनिक

नई दृष्टिबिंदु

सच की शक्ति, जनता की दृष्टि

PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

सु-विचार

" बड़प्पन वह गुण है जो पद से नहीं संस्कारों से प्राप्त होता है...!!

अज्ञात...

वर्ष-01 अंक-210 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, बुधवार 19 अगस्त 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य -2 रुपए

बर्तन बेचने की आड़ में चोरी करने वाला बांग्लादेशी हुआ गिरफ्तार

अत्याधुनिक तकनीक से खुलासा, 4 राज्यों में फैला था अवैध गैंग, 7 आपराधिक मामले दर्ज

नई दृष्टिबिंदु / बेमेतरा

पुलिस अधीक्षक त्रिलोक बंसल के निर्देशन में बेमेतरा पुलिस ने एक बड़ी कार्यवाही करते हुए बर्तन बेचने की आड़ में चोरी करने वाले बांग्लादेशी नागरिक को गिरफ्तार किया है। आरोपी अवैध रूप से बिना पासपोर्ट-वीजा के भारत में रह रहा था और 4 राज्यों में सक्रिय था।

तकनीकी विश्लेषण से हुआ खुलासा

थाना सिटी कोतवाली बेमेतरा क्षेत्र के सिंघौरी में पिछले माह हुई चोरी के मामले में 5 आरोपियों की गिरफ्तारी के बाद विवेचना की गई। अत्याधुनिक तकनीकी विश्लेषण के दौरान एक आरोपी की पहचान बांग्लादेशी नागरिक के रूप में हुई। गिरफ्तार आरोपी की पहचान मोहम्मद सुमोन खान पिता मोहम्मद सलाम खान, उम्र 24 वर्ष, निवासी रूस्तमनगर, थाना पार्वतीपुर, जिला दिनाजपुर, डिवीजन रंगपुर (बांग्लादेश) के रूप में हुई है।

फर्जी दस्तावेज बनाकर 4 राज्यों में करता था चोरी

पूछताछ में पता चला कि आरोपी भारत में प्रवेश के बाद कर्नाटक में फर्जी आधार और पैन कार्ड बनवाकर रहा था। वह मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और कर्नाटक में अपने साथियों के साथ मिलकर चोरियां करता था। आरोपी का तरीका बर्तन बेचने के नाम पर किराए का मकान लेना था। वह गांव-गांव और गली-मोहल्लों में घूमकर रेकी करता और मौके पाकर चोरी की वारदात को अंजाम देता था। जहां भी किराए पर रहता, वहां उसके कई साथी भी आते थे।

14 जिलों से संपर्क कर रही पुलिस

बेमेतरा पुलिस ने इस अवैध अप्रवासी गैंग से जुड़े अन्य अपराधियों की पतासाजी के लिए 14

जिलों से संपर्क किया है। इनमें कांकेर, कोरिया, इंदौर, साइबराबाद, पूर्वी दिल्ली, बड़गाम, दक्षिण दिनाजपुर, कृष्णानगर, नादिया, बागलकोट, बेलगाम, चंद्रपुर, नागपुर और कोरापुट शामिल हैं।

आरोपी के खिलाफ कबीरधाम, बेमेतरा, मुंगेली और राजनांदगांव में चोरी, नकबजनी और आर्म्स एक्ट के लगभग 7 प्रकरण दर्ज हैं। वर्ष 2019 में बेमेतरा और कवर्धा में, 2022 में राजनांदगांव में चोरी, कर्नाटक में लूट और नागपुर में आर्म्स एक्ट में जेल जा चुका है। जुलाई 2026 में जेल से छूटने के बाद वह फिर बेमेतरा में चोरी के आरोप में पकड़ा गया। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि आरोपी बिना वैध दस्तावेज के इतने सालों से रह रहा था क्योंकि मकान मालिकों ने किराए पर देने से पहले पुलिस को सूचना नहीं दी।

बेमेतरा पुलिस ने अपील की है

क्षेत्र में कोई बाहरी संदिग्ध व्यक्ति किराए पर रह रहा हो तो टोल फ्री नंबर 1800-233-1905 पर सूचना दें। नाम गोपनीय रखा जाएगा। मकान मालिक किराए पर देने से पहले किरायेदार के दस्तावेजों का सत्यापन करें और सूचना नजदीकी थाने में दें। इस कार्यवाही में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ. हरीश कुमार यादव, एसडीओपी बेमेतरा भुषण एक्का और एसडीओपी बेरला रूचि वर्मा का मार्गदर्शन रहा।

विश्लेषण

महस्के के नेतृत्व में बीजेपी की सोशल मीडिया रणनीति में बड़ा बदलाव

केमिस्ट्री क्लासरूम से बीजेपी डिजिटल वॉर रूम तक

आलोक तिवारी / नईदिल्ली

भारतीय जनता पार्टी ने संगठनात्मक पुनर्गठन के तहत अपने सबसे महत्वपूर्ण डिजिटल मोर्चे पर चेहरा और कार्यशैली दोनों बदल दिए हैं। पार्टी ने छत्तीसगढ़ से जुड़े दीपक महस्के को राष्ट्रीय सोशल मीडिया संयोजक नियुक्त किया है। अमित मालवीय के बाद यह पद बीजेपी के डिजिटल ढांचे में सबसे बड़ी जिम्मेदारी माना जाता है।

शिक्षक से डेटा रणनीतिकार तक का सफर : दीपक महस्के का राजनीतिक-डिजिटल सफर 2009 से शुरू होता है, जब सोशल मीडिया राजनीति में नया प्रयोग था। मूल रूप से केमिस्ट्री के शिक्षक रहे महस्के छत्तीसगढ़ बीजेपी के आईटी सेल प्रमुख और प्रवक्ता रह चुके हैं। इसके बाद उन्होंने कई राज्यों के विधानसभा चुनावों में बैकएंड पर काम किया। उनका फोकस हमेशा टीवी डिबेट या आक्रामक पोस्टिंग के बजाय वोटर डेटा, ट्रेंड एनालिसिस और क्षेत्रवार मुद्दों की वैज्ञानिक मैपिंग पर रहा है।

प्रशासनिक अनुभव भी उनके पास है। वे इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड के बोर्ड में स्वतंत्र निदेशक और छत्तीसगढ़ मेडिकल सर्विसेज कॉरपोरेशन के अध्यक्ष के रूप में राज्य मंत्री का दर्जा भी संभाल चुके हैं। नियुक्ति के बाद महस्के ने कहा कि पार्टी की प्राथमिकता चुनाव जीतकर जनता की सेवा करना है। सोशल मीडिया के जरिए टीम निष्ठा से काम करेगी। प्रोपेगैंडा से क्षणिक माहौल बनता है, लेकिन तथ्यों से जवाब देने पर भ्रम अपने आप खत्म हो जाता है। पूर्व संयोजक अमित मालवीय ने उन्हें बधाई दी। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि महस्के के नेतृत्व में पार्टी का डिजिटल संवाद और मजबूत होगा।

मालवीय बनाम महस्के: शैली में अंतर : अमित मालवीय की पहचान आक्रामक ट्वीट, राजनीतिक वार-पलटवार और सीधे नैरेटिव सेट करने से थी। वहीं महस्के की कार्यशैली पर्दे के पीछे डेटा एनालिटिक्स, साइलेंट कैंपेन और टार्गेटेड डिजिटल आउटरीच पर आधारित है। मालवीय विमर्श को ड्राइव करते थे, महस्के वोटर बिहेवियर को पढ़कर अभियान डिजाइन करेंगे।

नई टीम के साथ डिजिटल सफाई की हलचल : बीजेपी ने महस्के के साथ 4 सह-संयोजक भी नियुक्त किए हैं: हरियाणा से अरुण यादव, महाराष्ट्र से प्रीति गांधी, उत्तराखंड से आलोक भट्ट और दिल्ली से शिव आनंद द्विवेदी। टीम घोषित होते ही इनके सोशल मीडिया अकाउंट्स को लेकर हलचल दिखी। रिपोर्ट्स के अनुसार कुछ ने पुरानी पोस्ट्स आर्काइव कीं, कुछ ने अकाउंट रिस्ट्रिक्ट या निष्क्रिय किया।

इसकी वजह Gen-Z और विपक्षी फैक्ट-चेकर द्वारा पुराने ट्वीट्स के स्क्रीनशॉट खंगालने की आशंका मानी जा रही है। जंतर-मंतर जैसे हालिया आंदोलनों और मीम कल्चर के सामने पुराना आईटी मॉडल कमजोर पड़ रहा था। ऐसे में नई टीम ने डिजिटल फुटप्रिंट को पहले साफ करने की रणनीति अपनाई।

स्मृति ईरानी की वापसी, यूपी 2027 फोकस : संगठन में एक और अहम बदलाव में स्मृति ईरानी को राष्ट्रीय महासचिव बनाकर उत्तर प्रदेश की जिम्मेदारी सौंपी गई है। 2027 विधानसभा चुनाव को देखते हुए यह कदम उठाया गया है। पार्टी नेतृत्व का मानना है कि संसद और सड़क दोनों जगह राहुल गांधी के आक्रामक नैरेटिव को काउंटर करने के लिए ईरानी के तेवर और संवाद क्षमता कारगर साबित होंगे।

आगे की चुनौती

बीजेपी के लिए अब दोहरी चुनौती है। पहली, नई टीम को अपने ही पुराने डिजिटल रिकॉर्ड्स को मैनेज करके विश्वसनीयता बनानी है। दूसरी, Gen-Z वोटर जो बिना किसी केंद्रीय कमांड के मीम्स और तुरंत फैक्ट-चेकिंग से नैरेटिव तय कर रहा है, उससे मुकाबला करना है। दीपक महस्के का डेटा-ड्रिवन मॉडल इसीलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि आने वाले चुनाव अब केवल बड़े भाषणों से नहीं, बल्कि सूक्ष्म स्तर पर वोटर मूड, मुद्दे और माइक्रो-टार्गेटिंग से जीते जाएंगे। बीजेपी ने इसी जरूरत को देखते हुए केमिस्ट्री के शिक्षक को अपने डिजिटल वॉर रूम की कमान सौंपी है।

"एक लोटा जल से अखंड सौभाग्य का वरदान" - पंडित प्रदीप मिश्रा

जयंती स्टेडियम में शिवमहापुराण कथा के दूसरे दिन सुनाई मंगलागौरी की कथा

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

बोलबम सेवा समिति द्वारा जयंती स्टेडियम में आयोजित शिवमहापुराण कथा के दूसरे दिन 18 अगस्त 2026 को अंतर्राष्ट्रीय कथा वाचक पंडित प्रदीप मिश्रा सिहोर वाले ने सावन मंगलवारी पर मंगलागौरी की कथा सुनाई। उन्होंने कहा कि इस व्रत से अखंड सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

एक लोटा जल से बदली चंचुला की तकदीर

कथा में पंडित मिश्रा ने मंगलागौरी व्रत की महिमा बताते हुए कहा कि सावन के मंगलवार को किया गया यह व्रत अखंड सौभाग्य प्रदान करता है। उन्होंने चंचुला देवी का उदाहरण देते हुए कहा कि "चंचुलादेवी विधवा होने के बाद भी शिव जी को एक लोटा जल चढ़ाकर अखंड सौभाग्यवती हो गई और अपने पति को प्रेतयोनि से मुक्त करा लिया।"

उन्होंने कहा कि यज्ञ, अनुष्ठान और वर्षों के व्रत से बड़ा फल एक लोटा जल और शिवमहापुराण कथा सुनने से मिलता है। "एक सप्ताह यज्ञ, एक महीने पूजन, एक साल अनुष्ठान, 100 वर्ष व्रत और चार वर्ष तीर्थ के बराबर फल जिंदगी में एक बार शिवालय जाकर एक लोटा जल चढ़ाने और कथा सुनने से 10 हजार गुना प्राप्त होता है।" पंडित मिश्रा ने कहा कि "अगर कुछ नहीं कर सकते तो घर के पास शिवालय में एक लोटा जल चढ़ाना शुरू कर दो। कालसर्प दोष, वास्तुदोष, शनिदोष सहित संसार के सभी दोष दूर हो जाते हैं। तुम्हें भगवान से रिश्ता जोड़ने की जरूरत नहीं, बाबा खुद तुमसे रिश्ता बना लेंगे।"

आयोजक दयासिंह की सराहना

पंडित प्रदीप मिश्रा ने कार्यक्रम के आयोजक, बोलबम सेवा समिति के प्रदेशाध्यक्ष एवं भिलाई निगम के उपनेता प्रतिपक्ष दयासिंह की सराहना की। उन्होंने कहा, "आपका शिव जी से कोई पुराना संबंध रहा होगा तभी इतना बड़ा आयोजन करवा रहे हैं। लाखों लोगों के बैठने और भोजन की व्यवस्था करना किसी शिवभक्त के ही बस की बात है।"

बारिश में भी अडिग रहे शिवभक्त

दूसरे दिन भी कथा स्थल पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी। पूरे समय बारिश होती रही, लेकिन भक्त पंडाल के बाहर छाता लेकर घंटों खड़े होकर कथा सुनते रहे। इस नजारे को देख पंडित मिश्रा ने कहा, "मां कौशिल्या की नगरी छत्तीसगढ़ में ही ऐसे शिवभक्त हो सकते हैं जिन्हें बारिश भी नहीं डिगा पाती।" उन्होंने कहा कि उन्होंने वीडियो में दो बहनों को कथा स्थल की जगह के लिए लड़ते देखा है। "नातेदार जायदाद के लिए लड़ते हैं, लेकिन यह पहली कथा है जिसमें लोग कथा की जगह के लिए लड़ रहे हैं।"

छत्तीसगढ़ी पत्र पढ़कर जीता दिल

कथा के दौरान पंडित मिश्रा ने मुड़पार सुरगी निवासी लीलेश्वरी साहू द्वारा छत्तीसगढ़ी में लिखा पत्र पढ़ा। छत्तीसगढ़ी में पत्र पढ़ते ही पूरा पंडाल तालियों से गूंज उठा।

व्यासपीठ पूजन और व्यवस्थाएं

कथा से पहले व्यासपीठ का पूजन मुख्य यजमान मानसिंह, वीणा सिंह, रमेश सिंह, सीता सिंह, निर्मला सिंह, निर्मल सिंह, लाखन सिंह, जितेंद्र सिंह, जान्हवी सिंह, विश्वनाथ सिंह, आर्यन सिंह, सुधा सिंह, मीना सिंह और पूर्व विधानसभा अध्यक्ष धरमलाल कौशिक ने किया।

दूसरे दिन दोपहर 12 बजे ही गेट नंबर-1 शिव प्रवेश द्वार बंद कर दिया गया। पासधारियों को दूसरे गेट से प्रवेश दिया गया। आयोजकों के अनुसार जैसे-जैसे कथा आगे बढ़ रही है, श्रद्धालुओं की संख्या लगातार बढ़ रही है।

खुसीपार में पेयजल व्यवस्था का निरीक्षण, पानी के सैंपल जांच के लिए भेजे गए

आयुक्त सुरुचि सिंह के निर्देश पर निगम, पर्यावरण विभाग और भूजल बोर्ड की संयुक्त टीम ने किया दौरा

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

खुसीपार क्षेत्र में पेयजल की गुणवत्ता और आपूर्ति व्यवस्था को लेकर सोमवार को नगर पालिक निगम भिलाई की टीम, पर्यावरण विभाग और केंद्रीय भूजल बोर्ड के वैज्ञानिकों ने संयुक्त निरीक्षण किया। आयुक्त सुरुचि सिंह से चर्चा के बाद यह निरीक्षण किया गया।

निरीक्षण के दौरान टीम ने वार्ड क्रमांक 43, 44 एवं 46 में सप्लाई लाइन और बोरवेल से प्राप्त होने वाले पानी के नमूने परीक्षण के लिए। साथ ही मोहल्लेवासियों से पेयजल आपूर्ति को लेकर चर्चा कर उनकी समस्याओं और शिकायतों की जानकारी ली गई। स्थानीय लोगों से प्राप्त शिकायतों के आधार पर टीम ने स्टार एक्स तार प्राइवेट लिमिटेड का भी औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण में पाई गई कमियों के संबंध में पर्यावरण विभाग द्वारा नियमानुसार कार्रवाई की जा रही है।

गुणवत्ता सुधारने के लिए उठाया गया कदम

अधिकारियों ने बताया कि निरीक्षण का मुख्य उद्देश्य क्षेत्र में पेयजल की गुणवत्ता एवं आपूर्ति की वास्तविक स्थिति का परीक्षण कर आवश्यक सुधारात्मक कार्रवाई सुनिश्चित करना है। लिए गए पानी के नमूनों की जांच रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

निरीक्षण के दौरान केंद्रीय भूजल बोर्ड के वैज्ञानिक बी. अभिषेक, सहायक अभियंता अजय गौर, पर्यावरण अधिकारी संजय सिंह, उप अभियंता बसंत साहू, आशीष भारती, वेंकट सहित पर्यावरण विभाग की टीम उपस्थित रही।

CHMO को हटाने की मांग को लेकर कर्मचारियों का प्रदर्शन

महिला कर्मचारियों से दुर्व्यवहार का आरोप, निष्पक्ष जांच और कार्रवाई की मांग

नई दृष्टिबिंदु / बेमेतरा

जिले में स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों का आक्रोश मंगलवार को सड़कों पर फूट पड़ा। CMHO को पद से हटाने की मांग को लेकर बड़ी संख्या में स्वास्थ्य कर्मचारियों ने रैली निकालकर एक दिवसीय धरना-प्रदर्शन किया। इस दौरान कर्मचारियों ने जमकर नारेबाजी करते हुए प्रशासन के खिलाफ विरोध दर्ज कराया।

महिला कर्मचारियों से दुर्व्यवहार का लगाया आरोप

प्रदर्शनकारी कर्मचारियों का आरोप है कि CMHO द्वारा महिला कर्मचारियों के साथ कथित तौर पर दुर्व्यवहार किया गया है। कर्मचारियों ने पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कराने और CMHO को तत्काल पद से हटाने की मांग की। धरना स्थल पर कर्मचारियों ने कहा कि कार्यस्थल पर महिला कर्मचारियों के सम्मान और सुरक्षा से किसी भी तरह का समझौता नहीं किया जाएगा। उन्होंने मांग की कि मामले की निष्पक्ष जांच कर जिम्मेदार लोगों पर कार्रवाई की जाए, ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

आंदोलन तेज करने की दी चेतावनी

धरना-प्रदर्शन के दौरान कर्मचारियों में भारी आक्रोश देखने को मिला। प्रदर्शनकारियों ने स्पष्ट चेतावनी दी कि यदि उनकी मांगों पर जल्द उचित कार्रवाई नहीं की गई तो आंदोलन को और व्यापक एवं उग्र किया जाएगा। अब देखना होगा कि स्वास्थ्य कर्मचारियों की मांगों पर प्रशासन क्या कदम उठाता है और मामले की जांच किस दिशा में आगे बढ़ती है।

दुर्ग जिले में अब तक 589.1 मिमी औसत वर्षा दर्ज

दुर्ग। जिले में मानसून की अच्छी बारिश जारी है। जिला प्रशासन के अनुसार 1 जून 2026 से 18 अगस्त 2026 तक दुर्ग जिले में 589.1 मिमी औसत वर्षा दर्ज की गई है। कलेक्टर कार्यालय की भू-अभिलेख शाखा से प्राप्त जानकारी के मुताबिक इस अवधि में जिले की तहसीलों में अलग-अलग बारिश दर्ज हुई है।

भारतीय मजदूर संघ के अखिल भारतीय आव्हान पर दुर्ग में विशाल धरना-प्रदर्शन कर निकाली रैली

न्यूनतम वेतन 30 हजार, पुरानी पेंशन और ESI-EPF सीमा बढ़ाने की मांग, प्रधानमंत्री के नाम सौंपा ज्ञापन

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

भारतीय मजदूर संघ के अखिल भारतीय आह्वान पर 17 अगस्त 2026 को दुर्ग जिले में कर्मचारियों की जायज मांगों को लेकर विशाल धरना, प्रदर्शन और रैली निकाली गई। कार्यक्रम की शुरूआत डॉ. राजेन्द्र प्रसाद चौक पर धरना-प्रदर्शन से हुई। इसके बाद रैली निकालकर प्रधानमंत्री के नाम मांग पत्र दुर्ग जिला एसडीएम को सौंपा गया।

ये हैं प्रमुख मांगें

भारतीय मजदूर संघ ने ज्ञापन में भारत सरकार से निम्न मांगें की हैंः ठेका कर्मचारियों के लिए न्यूनतम वेतन 30,000 रुपये तय किया जाए। ESI की वेतन सीमा 21,000 से बढ़ाकर 42,000 रुपये की जाए। EPF की वेतन सीमा 15,000 से बढ़ाकर 30,000 रुपये की जाए। बोनस गणना का आधार 7,000 से बढ़ाकर 18,000 और बोनस सीमा 21,000 से बढ़ाकर 42,000 रुपये की जाए। न्यूनतम पेंशन 1,000 से बढ़ाकर 7,500 रुपये कर उसे परिवर्तनीय महंगाई भत्ते से जोड़ा जाए। स्कीम वर्कर, मिड डे मील, आंगनवाड़ी, आशा वर्कर को श्रमिक का दर्जा देकर सभी सामाजिक लाभ दिए जाए।

नगरीय निकायों और सरकारी विभागों में कार्यरत प्लेसमेंट कर्मचारियों को नियमित किया जाए। सभी शासकीय एवं निकाय कर्मचारियों के लिए पुरानी पेंशन योजना लागू की जाए। सरकारी और निजी उद्योगों में समान कार्य के लिए समान वेतन दिया जाए। ग्रेच्युटी की सीमा 40 लाख रुपये की जाए। SAIL कर्मचारियों का बकाया वेतन समझौता पूर्ण कर एरियर्स का भुगतान किया जाए। नए श्रम कानूनों से श्रमिक विरोधी प्रावधान हटाए जाएं।

बड़ी संख्या में संगठन हुए शामिल

धरना-प्रदर्शन में स्वायत्तशासी कर्मचारी महासंघ दुर्ग निगम, भिलाई निगम, रिसाली निगम, चरोदा निगम, बिजली कर्मचारी संघ महासंघ, निमार्णी मजदूर संघ, मिड डे मील संघ, भिलाई इस्पात मजदूर संघ, दक्षिण पूर्व रेलवे संघ, NSPCL कर्मचारी संघ, पोस्टल इंप्लाइज यूनियन, दुर्ग जिला औद्योगिक संघ सहित विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी और कार्यकर्ता शामिल हुए।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राज्य कर्मचारी संघ के अखिल भारतीय महामंत्री राजेंद्र कुमार श्रीवास्तव और सह उद्योग प्रभारी दिनेश पांडे रहे। जिला अध्यक्ष भारतीय मजदूर संघ मिथिलेश विश्वकर्मा, हरिशंकर चतुवेर्दी, शरद दुबे, अनिल सिंह, संजय मिश्रा, शशि यादव, आचार्य शशि भूषण मोहंती, मीडिया सह प्रभारी नवीन साहू, देवेंद्र चंद्राकर, वसुंधरा चौरे, प्रमिला देवांगन सहित सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित थे। वक्ताओं ने कहा कि जब तक सरकार कर्मचारियों की मांगों पर ठोस निर्णय नहीं लेती, आंदोलन जारी रहेगा।

खास खबर

24 अगस्त को निकलेगी भव्य कांवड़ यात्रा, देवबलौदा में होगा रुद्राभिषेक, विधायक देवेंद्र यादव बोले- कांवड़ यात्रा श्रद्धा, आस्था और भाईचारे का पर्व

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

सावन के पावन अवसर पर भिलाई नगर विधायक देवेंद्र यादव इस वर्ष भी 24 अगस्त को भव्य कांवड़ यात्रा निकालेंगे। भगवान भोलेनाथ की भक्ति से सराबोर इस यात्रा में भिलाई-दुर्ग सहित आसपास के हजारों श्रद्धालुओं के शामिल होने की उम्मीद है।

शिवनाथ नदी से शुरू होकर देवबलौदा पहुंचेगी यात्रा : कांवड़ यात्रा की शुरूआत दुर्ग स्थित शिवनाथ नदी से होगी। विधायक देवेंद्र यादव सुबह शिवनाथ नदी में स्नान कर भगवान शिव की पूजा-अर्चना और जलाभिषेक करेंगे। इसके बाद वे कांवड़ में पवित्र जल लेकर पैदल प्राचीन शिव मंदिर देवबलौदा के लिए रवाना होंगे। देवबलौदा पहुंचकर महामृत्युंजय मंत्र का जाप किया जाएगा। इसके बाद विधि-विधान से रुद्राभिषेक और विशेष पूजा-अर्चना संपन्न होगी। इस दौरान श्रद्धालु "बोल बम" और "भोलेनाथ के जयकारे" लगाते हुए यात्रा में शामिल होंगे।

भक्तिमय माहौल में निकलेगी कांवड़ : हर वर्ष होने वाली इस कांवड़ यात्रा में बड़ी संख्या में शिवभक्त उत्साह के साथ भाग लेते हैं। यात्रा के दौरान पूरे मार्ग पर डीजे पर भक्ति गीतों की गूंज, आकर्षक झांकियां और शिव भजनों से वातावरण भक्तिमय हो जाता है। सावन में होने वाला यह आयोजन भिलाई-दुर्ग क्षेत्र के प्रमुख धार्मिक आयोजनों में गिना जाता है।

"यह केवल धार्मिक आयोजन नहीं, भाईचारे का पर्व है" : विधायक देवेंद्र यादव ने कहा कि सावन भगवान शिव की आराधना का पवित्र महीना है। कांवड़ यात्रा केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि श्रद्धा, आस्था और आपसी भाईचारे का पर्व है। इसमें हर वर्ग के लोग भगवान भोलेनाथ की भक्ति में शामिल होते हैं। उन्होंने शिवभक्तों से अधिक से अधिक संख्या में यात्रा में शामिल होकर श्रद्धा के साथ भगवान शिव की आराधना करने की अपील की।

डेंगू-मलेरिया से बचाव के लिए निगम का विशेष अभियान, 79 घरों का हुआ सर्वेक्षण

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

नगर पालिक निगम भिलाई द्वारा मच्छर जनित रोग डेंगू एवं मलेरिया की रोकथाम तथा मच्छर उन्मूलन के लिए लगातार विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में आज जोन-4 शिवाजी नगर, वार्ड क्रमांक-51 शहीद वीर नारायण सिंह नगर खुसीपार अंतर्गत डॉ. राजेंद्र प्रसाद नगर में निगम के विशेष दस्ते द्वारा घर-घर गृह भेंट कर सवेर्लेंस सर्वेक्षण किया गया। अभियान के दौरान 79 घरों का सर्वेक्षण करते हुए कुल 271 प्रजनन स्रोतों का निरीक्षण किया गया। इनमें से 19 प्रजनन स्रोतों में पुराना जमा पानी पाया गया, जिसे तत्काल खाली कराया गया। इन प्रजनन स्रोतों में 05 कूलर, 05 टंकियां, 08 कंटेनर एवं 01 गमला शामिल हैं। मच्छर लार्वा नियंत्रण के लिए स्प्रेयर पम्प के माध्यम से 81 कूलरों में पानी मिश्रित एक्यूगार्ड का छिड़काव किया गया। वहीं वयस्क मच्छरों के नियंत्रण हेतु 89 कूलरों में पानी मिश्रित मेलाथियान का छिड़काव किया गया। इसके अतिरिक्त सर्वेक्षित 71 घरों के अंदर-बाहर, सीढ़ियों के नीचे तथा अंधेरे एवं नमी वाले स्थानों में भी पानी मिश्रित मेलाथियान का छिड़काव किया गया। मोहल्ले में स्थित पक्की एवं कच्ची नालियों में जहां भी पानी का जमाव पाया गया, वहां एक्यूगार्ड, मेलाथियान का छिड़काव कर मच्छरों के प्रजनन एवं नियंत्रण की कार्रवाई की गई। निगम के स्वास्थ्य अमले द्वारा सभी सर्वेक्षित घरों में नागरिकों को मच्छर रोधी आवश्यक स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान की गई तथा डेंगू- मलेरिया से बचाव के उपायों से संबंधित पम्पलेट का वितरण भी किया गया।

छग स्टेट जूनियर फीडे रेटेड चेस चैंपियनशिप के अंडर 19 में आलोक व सावी बने चैम्पियन

अंडर 17 में लोकेश पांडे और इशिका मड़के विजेता

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग-भिलाई

आल इंडिया चेस फेडरेशन के निर्देशन में छत्तीसगढ़ प्रदेश शतरंज संघ द्वारा खेल एवं युवा कल्याण विभाग छत्तीसगढ़ शासन के सहयोग से जिला शतरंज संघ दुर्ग द्वारा 14 से 16 अगस्त तक आयोजित छत्तीसगढ़ स्टेट जूनियर फीडे रेटेड शतरंज चैम्पियनशिप के अंडर 19 बालक वर्ग में रायपुर के आलोक कन्नौजे/1921, 7 हजार एवं ट्रॉफी/ ने 8 में से 7.5 अंक प्राप्त कर तथा बालिका वर्ग में रायपुर की सावी गौरी/1628,7 हजार एवं ट्रॉफी/ ने 5.5 अंक प्राप्त कर राज्य चैम्पियन बनने का गौरव प्राप्त किया। वही अंडर 17 बालक वर्ग में बिलासपुर के लोकेश पांडे/1726,5 हजार एवं ट्रॉफी/ ने 7 अंक प्राप्त कर तथा बालिका वर्ग में दुर्ग की इशिका मड़के/1696,5 हजार एवं ट्रॉफी/ ने 5.5 अंक प्राप्त कर राज्य विजेता बने। पुरस्कार वितरण समारोह के मुख्य अतिथि जैन मिलन के अध्यक्ष संजय चातुर कार्यक्रम के अध्यक्ष जैन मिलन भिलाई के महासचिव मुकेश जैन एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी विक्रम अवॉर्डी सुश्री किरण अग्रवाल, इंटरनेशनल आर्बिटर रॉकी देवांगन, रमेश अग्रवाल, सुबोध कुमार सिंह, दीपांकर सेन गुप्ता उपस्थित थे।

जिला शतरंज संघ दुर्ग के अध्यक्ष ईश्वर सिंह राजपूत एवं सचिव तुलसी सोनी ने बताया कि अंडर 19 बालक वर्ग में द्वितीय स्थान सालिक नवाज मनिहार/5 हजार एवं ट्रॉफी, राजनांदगांव/ तृतीय अहीलान रॉय/ 3 हजार एवं ट्रॉफी, रायपुर/ चतुर्थ शिल्प कुमार घोड़ेसवार/2 हजार रुपए एवं ट्रॉफी, दुर्ग/ पांचवा यश सिंह/1 हजार एवं मोमेंटो, रायपुर/ छठवां शुभांकर बामलिया/ 1 हजार एवं मोमेंटो/ रहे। अंडर 19 बालिका वर्ग में द्वितीय स्थान जसमन कौर/5 हजार एवं ट्रॉफी, कोरबा/ तृतीय अनिका रेड्डी गोलुगुरी/3 हजार एवं ट्रॉफी, रायपुर/ चतुर्थ सुकृति शर्मा/2 हजार एवं ट्रॉफी, रायपुर/ पांचवा अंशिका मिंज/1 हजार एवं मोमेंटो/ एवं छठवें स्थान पर शानिया ध्रुवंशी/1 हजार एवं मोमेंटो/ रहे। अंडर 17 के बालक वर्ग में द्वितीय स्थान भौमिक सिंह चौहान/3 हजार एवं ट्रॉफी, रायपुर/ तृतीय प्रांजल सिंह/2 हजार एवं ट्रॉफी, दुर्ग/ चतुर्थ कीरत सिंग गुजराल/1 हजार एवं ट्रॉफी/ पांचवा अभिनव सिंह राजपूत/ मोमेंटो, दुर्ग / छठवां स्थान उत्कर्ष यादव / मोमेंटो, रायपुर/ ने प्राप्त किया। अंडर 17 बालिका वर्ग में द्वितीय स्थान परिधि लिलहारे/3 हजार एवं ट्रॉफी, दुर्ग/ तृतीय चारवी माण्डले/ 2 हजार रुपए एवं ट्रॉफी, दुर्ग/ चतुर्थ कासवी जैन/1 हजार एवं ट्रॉफी, दुर्ग/ पांचवा अनिरुद्धी अनंत/मोमेंटो, रायगढ़/ एवं छठवां स्थान पर संबोधी सिंह/ मोमेंटो, बिलासपुर/ रही।

राष्ट्रीय शतरंज चैंपियनशिप के लिए इन खिलाड़ियों का हुआ चयन : छत्तीसगढ़ स्टेट जूनियर फीडे रेटेड शतरंज चैम्पियनशिप के अंडर 19 बालक वर्ग में आलोक कन्नौजे/रायपुर/ लोकेश पांडे/बिलासपुर/ सालिक नवाज मनिहार/राजनांदगांव/भौमिक सिंह चौहान/ रायपुर/ बालिका वर्ग में सावी गौरी/ रायपुर/ इशिका मड़के/दुर्ग/ जसमन कौर/कोरबा/परिधि लिलहारे/दुर्ग। अंडर 17 बालक वर्ग में आलोक कन्नौजे/रायपुर/ लोकेश पांडे/ बिलासपुर/ बालिका वर्ग में सावी गौरी / रायपुर/ इशिका मड़के/दुर्ग/ ये सभी चयनित खिलाड़ी आगामी राष्ट्रीय शतरंज चैंपियनशिप में छत्तीसगढ़ प्रदेश का प्रतिनिधित्व करेंगे।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि संजय चातुर ने आयोजन की सराहना करते हुए प्रदेश भर से आए शतरंज खिलाड़ियों को बधाई देते हुए कहा कि हार जीत जीवन का हिस्सा है। हार से निराश नहीं होकर हमें अपनी गलती में सुधार कर आगे की तैयारी करनी चाहिए। अध्यक्षता कर रहे मुकेश जैन ने कहा कि ऐसे आयोजन से प्रतिभा निखरकर सामने आती है। उन्होंने ऐसे आयोजन में सदैव सहयोग प्रदान करने का वादा किया।

विशिष्ट अतिथि विक्रम अवॉर्डी सुश्री किरण अग्रवाल ने कहा कि जब तक कड़ी अभ्यास एवं मेहनत नहीं करेंगे तब तक हम आगे नहीं बढ़ सकते। उन्होंने सभी से आग्रह करते हुए कहा कि एकाग्रता, धैर्य एवं संयम तथा कड़ी मेहनत कर हम कोई भी मुकाम हासिल कर सकते हैं। स्पर्धा में छत्तीसगढ़ के 17 जिलों से कुल 190 खिलाड़ियों ने भाग लिया था। सभी भाग लेने वाले खिलाड़ियों को मेडल एवं ई सर्टिफिकेट प्रदान कर सम्मानित किया गया। स्पर्धा के मुख्य निर्णायक इंटरनेशनल आर्बिटर रॉकी देवांगन एवं सहायक निर्णायक फीडे आर्बिटर अनिल शर्मा, ओमप्रकाश बंदे एवं सीनियर नेशनल आर्बिटर विक्रम सिंह राजपूत, चंदन विश्वकर्मा, मनोज साहू थे।

आयोजन में समाजसेवी कैलाश जैन बरमेचा, फीडे आर्बिटर अनिल शर्मा, तुलसी सोनी सह सचिव सुबोध कुमार सिंह, दीपांकर सेन गुप्ता, दिनेश जैन, सुरेन्द्र बल्लेवार, इम्तियाज अली का विशेष योगदान रहा। जिला शतरंज संघ दुर्ग द्वारा समस्त अतिथियों को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

सावन के तीसरे सोमवार और नागपंचमी पर शिवभक्ति के रंग में रंगे दुर्ग जिलेवासी

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग-भिलाई

सावन माह के तीसरे सोमवार और नागपंचमी के पावन पर्व पर सोमवार को पूरा दुर्ग जिला भगवान महादेव की भक्ति में सराबोर रहा। शहर से लेकर ग्रामीण अंचलों तक मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना, रुद्राभिषेक, महाभिषेक और धार्मिक आयोजनों का सिलसिला चलता रहा। हर-हर महादेव और बोल बम के जयघोष से वातावरण शिवमय हो उठा। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भगवान भोलेनाथ का रुद्राभिषेक और जलाभिषेक कर सुख-समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की।

द्वादश ज्योतिर्लिंग का महारुद्राभिषेक

मां शक्ति स्वरूपा महिला समिति, दुर्ग द्वारा सतरूपा शीतला मंदिर परिसर, सिविल लाइन में द्वादश ज्योतिर्लिंग का महारुद्राभिषेक एवं कालसर्प दोष निवारण पूजा का आयोजन किया गया। प्रसिद्ध पंडित हेमंत शर्मा के सानिध्य में श्रद्धालुओं ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ द्वादश ज्योतिर्लिंग का विधिवत महारुद्राभिषेक किया। इस अवसर पर द्वादश ज्योतिर्लिंग के पार्थिव शिवलिंग विशेष आकर्षण का केंद्र रहे। दर्शन एवं पूजा-अर्चना के लिए श्रद्धालुओं की कतार लगी रही। आयोजन में जिला भाजपा अध्यक्ष सुरेंद्र कौशिक, पूर्व विधायक अरुण वोरा, सतरूपा शीतला मंदिर समिति के अध्यक्ष रोमनाथ साहू, श्री साई मंदिर समिति के अध्यक्ष धनेन्द्र सिंह चंदेल सहित विभिन्न जनप्रतिनिधि तथा धार्मिक एवं सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी शामिल हुए। सभी ने प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि और खुशहाली के लिए भगवान महादेव से प्रार्थना की। आयोजन समिति मां शक्ति स्वरूपा महिला समिति की संयोजिका डॉ. भावना दिवाकर, समिति सदस्य रजनी ठाकुर, एल्डरमैन गौरव शर्मा सहित अन्य सदस्यों और श्रद्धालुओं ने आयोजन की व्यवस्थाओं में सक्रिय भूमिका निभाई। दुर्ग शहर जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा शिवनाथ नदी तट पर पार्थिव शिवलिंग का श्रद्धापूर्वक रुद्राभिषेक किया गया। आयोजन में कांग्रेस कार्यकताओं के साथ विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी और बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए।

शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष धीरज बाकलीवाल, पूर्व विधायक अरुण वोरा, पूर्व महापौर आरएन वर्मा, प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री राजेंद्र साहू सहित अन्य कांग्रेस नेताओं ने भगवान शिव का रुद्राभिषेक कर प्रदेश की सुख-शांति और समृद्धि की कामना की।

एसडीओपी प्रांशु तिवारी ने संभाला पदभार, पहले ही दिन थाना प्रभारियों की ली बैठक

नई दृष्टिबिंदु / पाटन

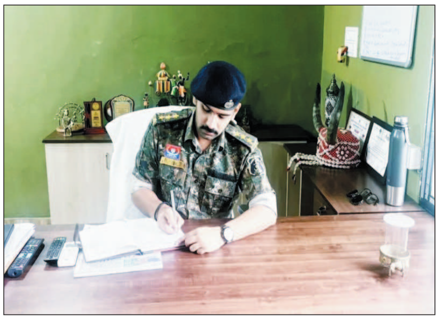

पाटन अनुभाग के नवपदस्थ एसडीओपी प्रांशु तिवारी ने पदभार ग्रहण कर लिया है। इससे पूर्व वे सुकमा जिले के चिंतागुफा में एसडीओपी के रूप में सेवाएं दे चुके हैं। पदभार संभालते ही उन्होंने अनुभाग की कानून-व्यवस्था की स्थिति की जानकारी ली और पहले ही दिन सभी थाना प्रभारियों के साथ बैठक कर पुलिसिंग व्यवस्था की समीक्षा की।

बैठक में एसडीओपी तिवारी ने थाना प्रभारियों से उनके-अपने क्षेत्रों में कानून-व्यवस्था, अपराध की स्थिति और प्रमुख समस्याओं की जानकारी ली। उन्होंने अपराध नियंत्रण एवं कानून-व्यवस्था को बेहतर बनाए रखने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। साथ ही आम नागरिकों की समस्याओं को गंभीरता से सुनकर उनका त्वरित निराकरण करने तथा पुलिस और जनता के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने पर जोर दिया।

एसडीओपी ने टोलाघाट क्षेत्र में कांवड़ियों की बढ़ती आवाजाही को देखते हुए सुरक्षा एवं यातायात व्यवस्था को लेकर भी आवश्यक इंतजाम करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि कांवड़ यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की परेशानी न हो और यातायात जाम की स्थिति निर्मित न हो, इसके लिए पुलिस बल को सतर्कता के साथ ड्यूटी करनी होगी।

निवर्तमान एसडीओपी को दी विदाई

पदभार ग्रहण करने के बाद प्रांशु तिवारी ने निवर्तमान एसडीओपी अनूप लकड़ा को ससम्मान विदाई दी। उन्होंने उनके कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं देते हुए नई जिम्मेदारी के लिए अग्रिम बधाई दी। इसके बाद एसडीओपी ने कार्यालयीन स्टाफ से परिचय प्राप्त किया। तत्पश्चात पाटन अनुभाग के अंतर्गत आने वाले थाना पाटन, रानीतराई, जामगांव आर, अमलेश्वर, अंडा एवं मचांदूर के थाना प्रभारियों से परिचय लेकर संबंधित थाना क्षेत्रों की कानून-व्यवस्था, अपराध नियंत्रण एवं पुलिसिंग व्यवस्था की विस्तृत जानकारी ली। नए एसडीओपी के पदभार ग्रहण करते ही थाना प्रभारियों के साथ हुई बैठक को क्षेत्र में कानून-व्यवस्था और पुलिसिंग व्यवस्था को और अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल माना

धार्मिक आयोजन — पेड़ लगाए पानी बचाएं और पॉलिथीन का उपयोग न करें : प्रचारक राकेश जैन

महापुरुषों का जीवन समाज और राष्ट्र के लिए समर्पण का संदेश देता है : राष्ट्रसंत मणिभद्र मुनि

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

जय आनंद मधुकर रतन भवन, बांधा तालाब दुर्ग में आचार्य सम्राट श्री आनंद ऋषि जी महाराज की 126वीं जन्म जयंती एवं संघ संरक्षक श्री खुबचंद जी महाराज की दीक्षा जयंती हर्ष, उल्लास एवं श्रद्धा के वातावरण में मनाई गई। इस अवसर पर सामायिक, सामूहिक एकासना तप सहित विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए राष्ट्रसंत मानव मिलन के संस्थापक मणिभद्र मुनि महाराज ने कहा कि साधारण लोग जन्म लेते हैं और मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं, लेकिन जो व्यक्ति जीवन की चुनौतियों को स्वीकार करते हुए उसे पूर्ण समर्पण के साथ जीता है, वही कालांतर में महापुरुष बनता है। महापुरुषों के जन्म, दीक्षा अथवा निर्माण से जुड़े स्थान तीर्थ के रूप में प्रतिष्ठित हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि जन्म और मृत्यु के बीच मिले जीवन को हम किस प्रकार जीते हैं और किस उद्देश्य के लिए जीते हैं, यही जीवन की वास्तविक सार्थकता है। संघ, समाज और राष्ट्र के प्रति हमारा योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। जिन महापुरुषों का समाज और राष्ट्र के निर्माण में अतुलनीय योगदान होता है, उनके कार्यो को देश, संघ और समाज सदैव श्रद्धा और कृतज्ञता के साथ याद करता है।

पर्यावरण संरक्षण के लिए पेड़ लगाएं, पानी बचाएं और पॉलिथीन का त्याग करें : आचार्य सम्राट श्री आनंद ऋषि जी महाराज की जन्म जयंती के प्रसंग पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राष्ट्रीय प्रचारक एवं पर्यावरण संरक्षण प्रकोष्ठ के सह-संयोजक राकेश जी जैन ने गुरु दर्शन कर धर्मसभा को संबोधित किया। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वर्तमान समय में पानी, पेड़ और पॉलिथीन पर्यावरण संरक्षण के प्रमुख विषय हैं। उन्होंने नागरिकों से आह्वान किया कि पेड़ लगाएं, पानी बचाएं और पॉलिथीन का उपयोग न करें।

जन्म जयंती एवं दीक्षा जयंती के अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने सामायिक एवं सामूहिक एकासना तप में सहभागिता कर धर्म आराधना की। संपूर्ण आयोजन स्थल श्रद्धा, भक्ति एवं आध्यात्मिक उल्लास से सराबोर रहा। आज के एकासना के लाभार्थी राकेश कुमार एवं टीकम कुमार बाफना परिवार तथा प्रभावना के लाभार्थी प्रेमचंद एवं नमन कुमार चोरड़िया परिवार रहे। लाभार्थी परिवारों के प्रति आयोजन समिति ने कृतज्ञता व्यक्त की।

जन्म एवं दीक्षा जयंती के उपलक्ष्य में जय आनंद मधुकर रतन भवन में धार्मिक क्रिकेट मैच प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जा रहा है। प्रतियोगिता का आयोजन श्री महावीर जी संचेती एवं श्रमण संघ महिला मंडल के मार्गदर्शन में किया जा रहा है, जिसमें धर्म और खेल के सुंदर समन्वय के साथ युवाओं एवं समाजजनों में उत्साह का वातावरण बना हुआ है। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं एवं समाजजनों ने उपस्थित होकर धार्मिक आयोजनों में सहभागिता की और आचार्य सम्राट आनंद ऋषि जी महाराज एवं संघ संरक्षक खुबचंद जी महाराज के जीवन, साधना एवं समाज के प्रति योगदान का स्मरण किया।

सुश्री लीना कोसम दुर्ग निगम की नई आयुक्त

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

दुर्ग निगम में पहली बार एक महिला आईएएस को आयुक्त के पद पर पदस्थापना दी गई है। लीना कोसम को आयुक्त बनाया गया है। इसके बाद से पूरे निगम में हड़कंप मच गया है। हड़कंप की मुख्य वजह लम्बे समय से निगम में चला आ रहा कमीशन का खेल है। करीब 15 से 20 प्रतिशत तक सभी में बंटता है। इसे निगम में शिष्टाचार्य समझ लिया गया है। सब का ओहदे के हिसाब से हिस्सा है। इसे अब तक रोका नहीं जा सका है।

अब एक आईएएस के वो भी महिला के दुर्ग निगम में आने की खबर के बाद चिंता बढ़ गई है। कही इसमें अंकुश न लग जाए। इतना ही नहीं डर उन फाइलों को लेकर भी है, जिसमें काला पीला किया गया है। या फिर जांच आगे ही नहीं बढ़ पाई। बता दें कि आईएएस सुमित अग्रवाल के ट्रांसफर के करीब महीनेभर बाद दुर्ग निगम को नया आयुक्त मिला है। भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी लीना कोसम को निगम की कमान सौंपी है। नगर निगम में आईएएस को बैठाए जाने के बाद एक बार फिर राजनीतिक खींचतान शुरू होने की आशंका बढ़ गई है। बता दें कि वर्तमान में दुर्ग निगम क्षेत्र में ही शिक्षामंत्री गजेंद्र यादव का निवास है। इसके अलावा बीजेपी की वरिष्ठ नेता सरोज पांडेय का भी यह कार्यक्षेत्र रहा है। इसके अलावा वर्तमान में महापौर अल्का बाघमार बीजेपी से हैं। कांग्रेस के पूर्व विधायक अरुण वोरा और पूर्व महापौर धीरज बाकलीवाल भी लंबे समय से निगम की राजनीति से जुड़े रहे हैं। इस वजह से निगम को काफी अहम माना जाता है। दुर्ग शहर की राजनीतिक पूरे समय निगम क्षेत्र के इर्द-गिर्द रहती है। इस वजह से एक बार फिर से निगम की राजनीति में गर्माहट आने की संभावना बनी हुई है। बता दें कि नए आयुक्त के सामने इन सभी को साधने के साथ शहर विकास में कार्य कराना बड़ी चुनौती है।

युवाओं की ऊर्जा और रचनात्मकता से बनेगा विकसित भारत और विकसित छत्तीसगढ़ : मुख्यमंत्री

माय भारत की उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक में मुख्यमंत्री ने युवाओं को राष्ट्र निर्माण से जोड़ने पर दिया गया जोर

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

भारत दुनिया के सबसे युवा देशों में से एक है और युवाओं की ऊर्जा, प्रतिभा, रचनात्मकता तथा नवाचार की क्षमता ही विकसित भारत के निर्माण की सबसे बड़ी शक्ति है। विकसित भारत के साथ विकसित छत्तीसगढ़ के संकल्प को साकार करने के लिए युवाओं को उनकी रुचि और क्षमता के अनुरूप अवसर देकर राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया से व्यापक रूप से जोड़ना होगा। युवाओं को सामाजिक एवं सामुदायिक गतिविधियों से जोड़ने से उनमें नेतृत्व क्षमता, सेवा भाव, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना मजबूत होगी। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने मंत्रालय महानदी भवन में आयोजित मेरा युवा भारत (माय भारत) की प्रदेश स्तरीय समीक्षा बैठक को संबोधित करते हुए यह बात कही।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने बैठक में माय भारत की गतिविधियों की विस्तार से समीक्षा करते हुए प्रदेश के अधिक से अधिक युवाओं को इस मंच से जोड़ने और विभिन्न विभागों की गतिविधियों में उनकी सक्रिय भूमिका सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश का प्रत्येक युवा विकास की मुख्यधारा से जुड़े और राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाए। इसी उद्देश्य से मेरा युवा भारत जैसे व्यापक मंच की शुरूआत की गई है। प्रधानमंत्री युवाओं के विचारों, आकांक्षाओं और गतिविधियों में विशेष रुचि लेते हैं तथा युवा शक्ति को विकसित भारत के संकल्प का प्रमुख आधार मानते हैं।

हर क्षेत्र में युवाओं को मिलें सेवा और नेतृत्व के अवसर

मुख्यमंत्री श्री साय ने स्वास्थ्य, स्वच्छता, शिक्षा, खेल, पर्यावरण संरक्षण, सिविक सेंस, इतिहास, पर्यटन, कौशल विकास, कृषि, तकनीकी शिक्षा, आपदा प्रबंधन और सामाजिक कल्याण सहित विभिन्न क्षेत्रों में युवाओं की भूमिका बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि जिन क्षेत्रों में युवा शक्ति का सहयोग उपयोगी हो सकता है, वहां माय भारत के माध्यम से उन्हें अवसर दिए जाएं। इससे एक ओर युवाओं को व्यावहारिक अनुभव मिलेगा, वहीं दूसरी ओर उनकी ऊर्जा और रचनात्मकता का समाज और प्रदेश के हित में बेहतर उपयोग होगा।

मुख्यमंत्री श्री साय ने सशक्त युवा-सशक्त छत्तीसगढ़ की भावना के अनुरूप ग्राम से लेकर राज्य स्तर तक मजबूत समन्वय और युवा नेटवर्क विकसित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि युवाओं की प्रतिभा को पहचानना, उन्हें अवसर देना और नेतृत्व के मंच उपलब्ध कराना सरकार की प्राथमिकता है। डिजिटल डिटॉक्स, सेवा भाव, सामाजिक जुड़ाव और सामुदायिक उत्तरदायित्व से संबंधित गतिविधियों को भी प्रोत्साहित किया जाए।

माय भारत से देशभर में जुड़े 2.65 करोड़ से अधिक युवा

बैठक में बताया गया कि मेरा युवा भारत युवाओं को सरकार, समाज और राष्ट्र निर्माण की गतिविधियों से जोड़ने वाला डिजिटल एवं भौतिक मंच है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 31 अक्टूबर 2023 को इसका शुभारंभ किया था। वर्तमान में देशभर में 2.65 करोड़ से अधिक युवा माय भारत प्लेटफॉर्म पर पंजीकृत हैं। छत्तीसगढ़ में भी 6.60 लाख से अधिक युवा इस मंच से जुड़ चुके हैं। माय भारत को युवाओं और सरकार के बीच सिंगल विंडो डिजिटल प्लेटफॉर्म के रूप में विकसित किया जा रहा है, जहां युवाओं को स्वयंसेवा, अनुभव आधारित शिक्षण, कौशल, नेतृत्व तथा राष्ट्र निर्माण से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों और अवसरों की जानकारी एक ही स्थान पर उपलब्ध हो सके। युवाओं की सुविधा के लिए माय भारत ऐप भी विकसित किया गया है।

अनुभव आधारित कार्यक्रमों से युवाओं को मिल रहा व्यावहारिक अवसर

बैठक में जानकारी दी गई कि देशभर में 24 हजार 900 से अधिक ईएलपी के माध्यम से 1.21 लाख युवाओं को शासन की विभिन्न गतिविधियों से जुड़ने और व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिला है। छत्तीसगढ़ में 233 ईएलपी के माध्यम से 2 हजार 389 से अधिक युवा जुड़े हैं। इसी प्रकार देशभर में 1.53 लाख से अधिक स्वयंसेवा अवसरों के माध्यम से 10 लाख से अधिक युवाओं को सेवा गतिविधियों से जोड़ा गया है। छत्तीसगढ़ में 5 हजार 778 वालंटियर अवसरों के माध्यम से 23 हजार 900 से अधिक युवाओं ने विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया है। केंद्र सरकार की योजनाओं और कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए क्विज मॉड्यूल के माध्यम से भी देशभर में 65 लाख से अधिक युवाओं को जोड़ा गया है।

गांव से राज्य तक तैयार होगा युवा नेटवर्क

बैठक में बताया गया कि मेरा युवा भारत की संगठनात्मक संरचना के अंतर्गत मुख्यालय के साथ 36 राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों में कार्यालय, जिला कार्यालय, युवा क्लब और माय भारत स्वयंसेवकों की व्यवस्था है। इस नेटवर्क के माध्यम से ग्राम स्तर से लेकर राज्य स्तर तक युवाओं को विभिन्न गतिविधियों और अवसरों से जोड़ा जा रहा है। मुख्यमंत्री श्री साय ने युवाओं को गैर-राजनीतिक सामाजिक एवं रचनात्मक गतिविधियों से जोड़ने पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि युवाओं की रुचि और प्रतिभा की पहचान कर उन्हें ऐसे अवसर उपलब्ध कराए जाएं, जिनसे उनके व्यक्तित्व और नेतृत्व क्षमता का विकास हो तथा समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना भी मजबूत बने।

विकसित छत्तीसगढ़ यंग लीडर्स डायलॉग पर विशेष जोर

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग को युवाओं में नेतृत्व क्षमता विकसित करने की महत्वपूर्ण पहल बताया। बैठक में जानकारी दी गई कि वर्ष 2025 में इसमें 30 लाख से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। युवा नेतृत्व के चयन को निष्पक्ष, पारदर्शी और योग्यता आधारित बनाने के लिए बहुस्तरीय चयन प्रक्रिया अपनाई गई है। बैठक में छत्तीसगढ़ में विकसित छत्तीसगढ़ यंग लीडर्स डायलॉग आयोजित करने पर भी विस्तार से चर्चा हुई। इसके माध्यम से खेल, स्वास्थ्य, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, तकनीकी शिक्षा एवं कौशल विकास, समाज कल्याण, नगरीय प्रशासन, आपदा प्रबंधन, पर्यटन और कृषि सहित विभिन्न क्षेत्रों में युवाओं की भूमिका बढ़ाने पर जोर दिया गया।

विकसित भारत यूथ पार्लियामेंट, विकसित वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम, विकसित भारत युवा कनेक्ट, यूथ आइकन, विकसित भारत पदयात्रा, सरदार@150 पदयात्रा और नशामुक्त युवा फॉर विकसित भारत जैसी गतिविधियों के माध्यम से भी युवाओं को राष्ट्र निर्माण और नेतृत्व से जोड़ने के प्रयासों की जानकारी बैठक में दी गई।

बस्तर के युवाओं के लिए खुलें अवसरों के नए द्वार : मुख्यमंत्री श्री साय ने बस्तर के युवाओं को माय भारत की गतिविधियों से व्यापक स्तर पर जोड़ने पर विशेष जोर दिया। उन्होंने कहा कि बस्तर नक्सलवाद की हिंसा और भय के दौर को पीछे छोड़कर शांति, विश्वास और विकास की नई दिशा में आगे बढ़ रहा है। ऐसे समय में बस्तर के युवाओं को राष्ट्र निर्माण की गतिविधियों से जोड़ना अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि लंबे समय तक परिस्थितियों के कारण विकास की मुख्यधारा से दूर रहे युवाओं के लिए आज नए अवसरों के द्वार खुल रहे हैं। माय भारत से जुड़ने से उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा, उनकी प्रतिभा को पहचान मिलेगी और उन्हें अपनी क्षमता के अनुरूप आगे बढ़ने के अवसर मिलेंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि डबल इंजन सरकार के प्रयासों से बस्तर के सुदूर क्षेत्रों तक विकास और अवसर पहुंच रहे हैं। पिछले दो वर्षों में बस्तर ओलंपिक और बस्तर पंडुम जैसे आयोजनों ने बड़ी संख्या में युवाओं को अपनी खेल प्रतिभा, कला और संस्कृति प्रदर्शित करने का मंच दिया है। इसी प्रकार माय भारत के माध्यम से भी बस्तर के युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ने और नेतृत्व करने के अवसर दिए जाएं। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि बस्तर के युवाओं की प्रतिभा और सामर्थ्य को उचित अवसर देकर उन्हें छत्तीसगढ़ और देश के विकास का सक्रिय भागीदार बनाना हमारी प्राथमिकता है।

बैठक के दौरान माय भारत की वालंटियर अदिति द्वारा तैयार ट्राइबल आर्ट का छायाचित्र मुख्यमंत्री विष्णु देव साय को भेंट किया गया। मुख्यमंत्री ने उनकी रचनात्मक प्रतिभा की सराहना की। बैठक में उप मुख्यमंत्री अरुण साव, मुख्य सचिव विकासशील, मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव श्री सुबोध कुमार सिंह, मुख्यमंत्री के सचिव श्री राहुल भगत, खेल एवं युवा कल्याण विभाग के सचिव श्री यशवंत कुमार, संचालक श्रीमती तनुजा सलाम, माय भारत की सीईओ डॉ. प्रियंका शुक्ला, मुख्यमंत्री के विशेष सचिव श्री रजत बंसल सहित माय भारत के राज्य एवं जिला स्तर के अधिकारी उपस्थित थे।

खास खबर

नवा रायपुर में करेंसी डिस्ट्रीब्यूशन सेंटर स्थापित करने की दिशा में पहल, वित्त मंत्री चौधरी से RBI महाप्रबंधक ने की मुलाकात

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

वित्त मंत्री ओपी चौधरी से रायपुर स्थित उनके निवास पर भारतीय रिजर्व बैंक, रायपुर कार्यालय के महाप्रबंधक मनीष पराशर ने शिष्टाचार भेंट की। प्रभारी अधिकारी का कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात हुई इस मुलाकात में छत्तीसगढ़ में बैंकिंग एवं वित्तीय सेवाओं के विस्तार, मुद्रा प्रबंधन तथा भारतीय रिजर्व बैंक से संबंधित विभिन्न विषयों पर सकारात्मक एवं सार्थक चर्चा हुई। बैठक के दौरान वर्तमान में नागपुर से होने वाले करेंसी डिस्ट्रीब्यूशन को नवा रायपुर में स्थापित करने की दिशा में की जा रही महत्वपूर्ण पहल पर भी चर्चा हुई। नवा रायपुर में करेंसी डिस्ट्रीब्यूशन की व्यवस्था विकसित होने से राज्य में मुद्रा प्रबंधन और बैंकिंग सेवाओं को और अधिक प्रभावी एवं सुगम बनाने में मदद मिलेगी।

श्री पराशर ने वित्त मंत्री को राज्य में बैंकिंग सेवाओं तथा मुद्रा प्रबंधन को बेहतर बनाने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। इस दौरान भारतीय रिजर्व बैंक, रायपुर कार्यालय में हाल ही में प्रारंभ की गई सॉइल्ड नोट्स के स्थानीय प्रसंस्करण की व्यवस्था के संबंध में भी जानकारी साझा की गई। इस सुविधा से प्रचलन से वापस प्राप्त अनुपयोगी एवं खराब हो चुके नोटों का प्रसंस्करण अब स्थानीय स्तर पर किया जा सकेगा।मुलाकात के दौरान भारतीय रिजर्व बैंक की प्रस्तावित नवीन आवासीय परियोजना तथा इससे जुड़े विभिन्न पहलुओं पर भी विचार-विमर्श हुआ। वित्त मंत्री ओ.पी. चौधरी ने इन पहलों की जानकारी प्राप्त करते हुए राज्य शासन की बैंकिंग प्रणाली से जुड़ी अपेक्षाओं को साझा किया। उन्होंने छत्तीसगढ़ में बैंकिंग एवं वित्तीय सेवाओं को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक एवं राज्य शासन के बीच निरंतर सहयोग और बेहतर समन्वय की आवश्यकता पर बल दिया। इस अवसर पर प्रदीप गोंधुले, अमरेन्द्र गुप्ता एवं अमितेश सिंह उपस्थित रहे।

एमबीए कर मोहन चंद्राकर ने खेती को बनाया मॉडल प्राकृतिक एवं जैविक खेती को दे रहें हैं बढ़ावा

रायपुर। एमबीए कर मोहन चंद्राकर ने खेती को बनाया मॉडल प्राकृतिक एवं जैविक खेती को दे रहें हैं बढ़ावामहासमुंद जिले के ग्राम केशवा निवासी मोहन चंद्राकर आज प्रगतिशील एवं नवाचारी किसान के रूप में अपनी अलग पहचान बना चुके हैं। एमबीए की शिक्षा के बाद वर्ष 1997 से 2013 तक मल्टीनेशनल कंपनी में नौकरी करने वाले श्री चंद्राकर ने वर्ष 2013 में खेती की ओर लौटकर कृषि को व्यवसाय के रूप में विकसित करने का संकल्प लिया। श्री चंद्राकर जैविक एवं प्राकृतिक पद्धति से खेती करते हुए पारंपरिक, सुगंधित और औषधीय गुणों वाली फसलों को बढ़ावा दे रहे हैं। उनके प्रक्षेत्र में जावफूल, विष्णुभोग, जोहा, चखव, संजवनी, पीहू पर्पल राइस तथा काला गेहूं जैसी फसलों का उत्पादन किया जा रहा है। अपनी उपज का प्रसंस्करण वे स्वयं की राइस मिल में कर तथास्तु - अच्छे लोग, अच्छा भोजन ब्रांड के माध्यम से बाजार तक पहुंचाते हैं।

रिमझिम फुहारों के बीच खेल प्रतिभाओं ने भरी उड़ान, 26वीं राज्य स्तरीय शालेय क्रीड़ा स्पार्धा का शुभारंभ

पांचों संभागों के 540 खिलाड़ियों ने किया आकर्षक मार्चपास्ट

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

रिमझिम फुहारों के बीच खुशनुमा और उत्साहपूर्ण माहौल में मंगलवार को पेण्ड्रा के फिजिकल कॉलेज मैदान में 26वीं राज्य स्तरीय शालेय क्रीड़ा प्रतियोगिता का भव्य शुभारंभ हुआ। केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य राज्य मंत्री श्री तोखन साहू ने ध्वजारोहण कर 18 से 21 अगस्त तक चलने वाली चार दिवसीय प्रतियोगिता के विधिवत शुभारंभ की घोषणा की। उद्घाटन समारोह में खेल प्रतिभाओं के उत्साह, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और आकर्षक मार्चपास्ट ने पूरे वातावरण को खेलमय बना दिया। प्रतियोगिता में प्रदेश के पांचों संभागों रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग, बस्तर और सरगुजा से 14 से 19 वर्ष आयु वर्ग के कुल 540 खिलाड़ी हिस्सा ले रहे हैं। विभिन्न खेल विधाओं में प्रतिभागी अपनी खेल प्रतिभा और कौशल का प्रदर्शन करेंगे।

उद्घाटन अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री तोखन साहू ने सभी प्रतिभागी खिलाड़ियों को खेल नियमों का पूर्ण पालन करते हुए सच्चे अनुशासन, निष्ठा और खेल भावना के साथ प्रतियोगिता में भाग लेने की शपथ दिलाई। उन्होंने खिलाड़ियों से अपने खेल के गौरव, राज्य के सम्मान और खेल भावना की उच्च परंपराओं को अक्षुण्ण रखने का आह्वान किया। उन्होंने प्रतियोगिता में शामिल सभी खिलाड़ियों एवं अतिथियों का जीपीएम की धरती पर स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए कहा कि अब खेल को देखने का नजरिया बदल गया है। खेल में हम या तो जीतते हैं या सीखते हैं। उन्होंने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि खेल को ऐसे खेलें कि वह पढ़ाई बन जाए और पढ़ाई को ऐसे पढ़ें कि वह खेल बन जाए।

श्री साहू ने खिलाड़ियों को तनाव और अवसाद से मुक्त होकर पूरे आत्मविश्वास, अनुशासन और खेल भावना के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि खेल केवल प्रतियोगिता में जीतने का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन में अनुशासन, आत्मविश्वास, धैर्य और संघर्ष की भावना विकसित करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। उन्होंने सभी प्रतिभागी खिलाड़ियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

चार खेल विधाओं में प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे 540 खिलाड़ी

चार दिवसीय राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में जिम्नास्टिक, कबड्डी, क्रिकेट और ताइक्वांडो की स्पर्धाएं आयोजित की जा रही हैं। जिम्नास्टिक में बालक एवं बालिका, कबड्डी में बालिका, क्रिकेट में बालक तथा ताइक्वांडो में बालक एवं बालिका खिलाड़ी हिस्सा ले रहे हैं। प्रतियोगिता के अंतर्गत जिम्नास्टिक की स्पधाएं जिम्नास्टिक हॉल, गुरुकुल गौरेला, क्रिकेट की स्पधाएं फिजिकल कॉलेज मैदान, गुरुकुल पेण्ड्रा, ताइक्वांडो की स्पधाएं जनपद सभागार पेण्ड्रा तथा कबड्डी की स्पधाएं कबड्डी प्रशिक्षण केन्द्र पेण्ड्रा में आयोजित की जा रही हैं।

रंग-बिरंगी पोशाकों में खिलाड़ियों का आकर्षक मार्चपास्ट

उद्घाटन समारोह का सबसे आकर्षक दृश्य पांचों संभागों से आए खिलाड़ियों का मार्चपास्ट रहा। केसरिया, पीला, नीला, हरा, लाल और सफेद रंग की आकर्षक पोशाकों में सजे खिलाड़ियों की टुकड़ियों ने पूरे अनुशासन और उत्साह के साथ मार्चपास्ट किया। खिलाड़ियों के जोश और उमंग से पूरा मैदान तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। इस अवसर पर स्कूली छात्राओं ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शानदार प्रस्तुति देकर समारोह में छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विविधता और विद्यार्थियों की प्रतिभा का सुंदर प्रदर्शन किया। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने उपस्थित अतिथियों और दर्शकों का मन मोह लिया।

कार्यक्रम के दौरान कोटा विधानसभा क्षेत्र के विधायक अटल श्रीवास्तव ने सभी प्रतिभागी खिलाड़ियों को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए शुभकामनाएं दीं। उन्होंने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए प्रतियोगिता की सफलता की कामना की। फिजिकल कॉलेज मैदान पेण्ड्रा में भविष्य में आयोजित होने वाले खेल एवं अन्य सार्वजनिक कार्यक्रमों के लिए सुंदर, सुसज्जित और बड़े मंच के निर्माण की घोषणा भी की गई। सांसद सह केंद्रीय राज्य मंत्री तोखन साहू ने 10 लाख रुपये तथा विधायक अटल श्रीवास्तव ने 5 लाख रुपये, इस प्रकार कुल 15 लाख रुपये देने की घोषणा की। इस घोषणा का उपस्थित लोगों ने स्वागत किया।

खिलाड़ियों को बेहतर वातावरण उपलब्ध कराने पर जोर

कलेक्टर विजय दयाराम के. ने प्रतियोगिता में शामिल सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं देते हुए प्रतियोगिता की सफलता की कामना की। उन्होंने आयोजन से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रतियोगिता के दौरान खिलाड़ियों की सुविधा, सुरक्षा और आवश्यक व्यवस्थाओं का विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए। कार्यक्रम में जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा प्रतियोगिता से संबंधित खेल प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। आयोजक मंडल की ओर से अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

26वीं राज्य स्तरीय शालेय क्रीड़ा प्रतियोगिता प्रदेश के विभिन्न अंचलों से आए स्कूली खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का महत्वपूर्ण मंच प्रदान कर रही है। चार दिनों तक चलने वाली विभिन्न खेल स्पधाओं में खिलाड़ी न केवल अपनी खेल क्षमता का प्रदर्शन करेंगे, बल्कि अनुशासन, टीम भावना, प्रतिस्पर्धा और खेल भावना की सीख भी प्राप्त करेंगे। उद्घाटन समारोह में जिला पंचायत अध्यक्ष सुश्री समीरा पैकरा, अध्यक्ष नगर पालिका परिषद पेण्ड्रा राकेश जालान, अध्यक्ष नगर पालिका परिषद गौरेला मुकेश दुबे, जनपद पंचायत गौरेला अध्यक्ष शिवनाथ बघेल, जनपद पंचायत मरवाही अध्यक्ष श्रीमती जानकी कुशरो, पुलिस अधीक्षक मनोज खिलारी, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी मुकेश रावटे, जिला शिक्षा अधिकारी रजनीश तिवारी सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि, गणमान्य नागरिक, अधिकारी-कर्मचारी, मीडिया प्रतिनिधि एवं प्रतिभागी खिलाड़ी उपस्थित रहे।

तेंदूपत्ता सहित वनोपज के बेहतर विपणन पर सरकार का जोर- वन मंत्री केदार कश्यप

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

वन मंत्री केदार कश्यप की अध्यक्षता में वनोपज राजकीय व्यापार अंतर्विभागीय समिति(आईडीसी) की 321वीं बैठक आयोजित हुई। यह बैठक नया रायपुर स्थित मंत्री श्री कश्यप के निवास/ कार्यालय में आयोजित थी। बैठक में वर्ष 2026 में संग्रहित एवं गोदामीकृत तेंदूपत्तों के विक्रय के लिए द्वितीय चरण की कार्यवाही तथा वर्ष 2025 सीजन के क्रेता करारनामा समाप्त तेंदूपत्ता लॉट के विक्रय के लिए प्राप्त निविदाओं पर विस्तार से चर्चा की गई। इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव मनोज कुमार पिंगुवा, वन बल प्रमुख अरूण कुमार पाण्डेय, सचिव अमरनाथ, मुख्य वन संरक्षक कोशलेन्द्र कुमार, मुख्य वनसंरक्षक श्रीमती संजीता गुप्ता, कार्यकारी निदेशक वन एस. वेंकटचलम सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

बैठक में 4 अगस्त 2026 को आमंत्रित निविदाओं में प्राप्त दरों के अनुमोदन से संबंधित प्रस्तावों पर भी विचार-विमर्श किया गया। वन मंत्री श्री केदार कश्यप ने वनोपज के बेहतर प्रबंधन, पारदर्शी प्रक्रिया और संग्रहणकताओं के हितों को ध्यान में रखते हुए तेंदूपत्ता सहित अन्य वनोपज के प्रभावी विपणन पर जोर दिया।

संग्राहकों के हितों को प्राथमिकता

राज्य सरकार द्वारा वन क्षेत्रों में रहने वाले ग्रामीणों और आदिवासी परिवारों की आजीविका को मजबूत करने के लिए लघु वनोपज के संग्रहण और विपणन को लगातार बढ़ावा दिया जा रहा है। तेंदूपत्ता संग्रहण से जुड़े परिवारों को उनकी मेहनत का उचित लाभ मिले, इसके लिए शासन द्वारा संग्रहण मूल्य, विपणन व्यवस्था और भुगतान प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया गया है। बैठक में तेंदूपत्ते के भंडारण, लॉटवार विक्रय और प्राप्त निविदा दरों सहित विभिन्न विषयों की समीक्षा की गई। अधिकारियों को नियमानुसार आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए, ताकि संग्रहित वनोपज का समयबद्ध और बेहतर तरीके से विक्रय किया जा सके।

वनोपज आधारित अर्थव्यवस्था को मिल रहा बढ़ावा

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार वनवासियों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए लघु वनोपज आधारित गतिविधियों को प्राथमिकता दे रही है। वन मंत्री केदार कश्यप के मार्गदर्शन में वनोपज के संग्रहण से लेकर प्रसंस्करण और विपणन तक की व्यवस्थाओं को मजबूत किया जा रहा है। इससे वनांचल के लोगों को रोजगार और आय के बेहतर अवसर उपलब्ध कराने के साथ उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिल रहा है।

विष्णुभोग की खुशबू और बहनों के हुनर से सजी खास राखी

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर-जीपीएम

गौरेला पेंड्रा मरवाही जिले की बिहान महिला स्व-सहायता समूहों की महिलाओं ने केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य राज्य मंत्री तोखन साहू से आत्मीय मुलाकात कर उन्हें जिले की पहचान विष्णुभोग चावल तथा विष्णुभोग धान से तैयार की गई विशेष राखी भेंट की। स्थानीय संसाधनों से तैयार इन उत्पादों को देखकर श्री साहू ने बिहान समूह की महिलाओं की रचनात्मकता, मेहनत और आत्मनिर्भरता की भावना की सराहना की। उन्होंने महिलाओं द्वारा स्थानीय उत्पादों को नए रूप में प्रस्तुत कर आजीविका के अवसर तैयार करने की पहल को प्रेरणादायी बताया।

बिहान समूह की महिलाओं द्वारा विष्णुभोग धान से तैयार की गई विशेष राखी स्थानीय संस्कृति, रचनात्मकता और महिला सशक्तिकरण का अनूठा संगम है। पारंपरिक पर्व रक्षाबंधन को जिले के स्थानीय कृषि उत्पाद से जोड़ते हुए तैयार की गई यह राखी न केवल एक हस्तनिर्मित उत्पाद है, बल्कि स्थानीय संसाधनों के बेहतर उपयोग और ग्रामीण महिलाओं की उद्यमशीलता का भी उदाहरण प्रस्तुत करती है। विष्णुभोग धान जिले की विशिष्ट पहचान से जुड़ा उत्पाद है। महिलाओं ने इसी स्थानीय पहचान को अपनी रचनात्मकता से जोड़कर एक ऐसा उत्पाद तैयार किया है, जो स्थानीय संस्कृति और आजीविका दोनों को एक साथ बढ़ावा देता है।

बिहान से जुड़ी महिला स्व-सहायता समूहों द्वारा स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों का उपयोग कर विभिन्न प्रकार के उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से महिलाओं को रोजगार और अतिरिक्त आय के अवसर मिल रहे हैं तथा वे अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में योगदान दे रही हैं। विष्णुभोग चावल और उससे जुड़े स्थानीय उत्पादों को आकर्षक स्वरूप देकर बाजार तक पहुंचाने की दिशा में महिला समूहों की पहल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती देने की क्षमता रखती है। ऐसी गतिविधियां महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ाने के साथ उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

विष्णुभोग धान से तैयार विशेष राखी यह संदेश देती है कि स्थानीय संसाधनों और पारंपरिक पहचान को रचनात्मकता से जोड़कर आजीविका के नए अवसर विकसित किए जा सकते हैं। बिहान समूह की महिलाओं की यह पहल महिला सशक्तिकरण, स्थानीय उत्पादों के प्रोत्साहन और आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था की दिशा में एक सकारात्मक कदम है।

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर, तहसील व जिला-दुर्ग

-:: ईश्तहार ::-

(रा.प्र.क्र. 202608101000015/अ/6 वर्ष 2025-26)

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदिका हिमांशु तिवारी एवं अन्य 01 पिता हरेन्द्र तिवारी निवासी - मोतीलाल नेहरू नगर भिलाई द्वारा ग्राम कोहका प.ह.नं. 45 रा.नि.मं. कोहका तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि स्वामी हक की भूमि खसरा नं. 2149/22 रकबा 0.010 हे /1000 वर्गफीट भूमि को रजिस्ट्री बैनामा के माध्यम से दिनांक 21. 10.2024 को विक्रेता श्रीमती हेमिन बाई सिन्हा पति नरसिंग सिन्हा से क्रय किया गया है, कि रजिस्ट्री बैनामा के आधार पर नामांतरण किये जाने बाबत् आवेदन पत्र मय बैनांमा की छाया प्रति प्रस्तुत किया गया है।

24 अतः उपरोक्त भूमि के संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति को आपत्ति या उजर दावा हो तो सुनवाई तिथि दिनांक 24.08.2026 तक या उसके पूर्व स्वयं या अपने मान्य अधिवक्तागण के साथ उपस्थित होकर अपना आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त आवेदन पत्र पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 13/08/2026 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय के मुहर से जारी किया गया है।

अतिरिक्त तहसीलदार
भिलाई नगर

कार्यालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर, जिला-दुर्ग (छ.ग.)

-:: व्यक्तिगत सूचना ::-

(रा.प्र.क्रं. 202608101000049/अ-6/वर्ष 2025-26

नारद प्रसाद पिता हल्लूराम
आयु सेलूद तह. व जिला दुर्ग छ.ग.

एतद द्वारा आपको सूचित किया जाता हैं कि आवेदक क्रेता तुकराम साहू पिता बिसौहा साहू निवासी कोहका द्वारा ग्राम कोहका प.ह.नं. 45 रा.नि.मं. कोहका तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि ख.नं. 343 रकबा 0.03 हे. भूमि को रजिस्टर्ड बैनामा के आधार पर विक्रेता नारद प्रसाद पिता हल्लूराम से क्रय किया है कि उक्त आवेदित भूमि को रजिस्टर्ड बैनामा के आधार पर नामांतरण किये जाने के संबंध में आवेदन पत्र मय बनामा की छायाप्रति इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।

अतः आपको इस संबंध में यदि कोई आपत्ति एवं दावा उजर पेश करना हो तो पेशी दिनांक 27.08.2020 तक स्वयं अथवा अपने द्वारा अधिकृत व्यक्ति के माध्यम से न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति दावा या उजर प्रस्तुत कर सकते हैं। बाद में प्राप्त आपत्ति आवेदन पर कोई कार्यवाही नही किया जावेगा।

आज दिनांक 18.08.2026 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय के पदमुद्रा से प्रकाषन हेतु जारी किया गया हैं।

अतिरिक्त तहसीलदार
भिलाई नगर

कार्यालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर, जिला-दुर्ग (छ.ग.)

-:: व्यक्तिगत सूचना ::-

(रा.प्र.क्रं. 202608101000047/अ-6/वर्ष 2025-26

कुमूदराम पिता सहबूराम
आयु कोहका तह. व जिला दुर्ग छ.ग.

एतद द्वारा आपको सूचित किया जाता हैं कि आवेदक क्रेता तुकराम साहू पिता बिसौहा साहू निवासी कोहका द्वारा ग्राम कोहका प.ह.नं. 45 रा.नि.मं. कोहका तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि ख.नं. 361 रकबा 0.02 हे० भूमि को रजिस्टर्ड बैनामा के आधार पर विक्रेता कुमूदराम पिता सहबूराम से क्रय किया है कि उक्त आवेदित भूमि को रजिस्टर्ड बैनामा के आधार पर नामांतरण किये जाने के संबंध में आवेदन पत्र मय बनामा की छायाप्रति इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है।

अतः आपको इस संबंध में यदि कोई आपत्ति एवं दावा उजर पेश करना हो तो पेशी दिनांक 27.08.2020 तक स्वयं अथवा अपने द्वारा अधिकृत व्यक्ति के माध्यम से न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति दावा या उजर प्रस्तुत कर सकते हैं। बाद में प्राप्त आपत्ति आवेदन पर कोई कार्यवाही नही किया जावेगा।

आज दिनांक 18.08.2026 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय के पदमुद्रा से प्रकाषन हेतु जारी किया गया हैं।

अतिरिक्त तहसीलदार
भिलाई नगर

संपादकीय

पीएम मोदी का दिमागी नक्सली का तीर ठीक निशाने पर लगा है

पीएम मोदी के लिए नेशन फर्स्ट हमेशा रहा है, वह देश को नुकसान पहुंचाने वाले लोगों को बखूबी पहचानते हैं और समय समय पर देश के लोगों को उनसे सावधान रहने को कहते रहते हैं ताकि देश के नुकसान पहुंचाने वाले देश को नुकसान न पहुंचा सकें। 15 अगस्त के भाषण में उन्होंने हथियारी नक्सलियों के देश से समाप्त हो जाने का जिक्र करते हुए देश को आगाह किया था कि हथियारी नक्सली तो समाप्त हो गए हैं लेकिन दिमागी नक्सली देश में है और वह देश के लिए उससे भी बड़ा खतरा है क्योंकि हथियारी नक्सली को जन्म देने वाले यहीं हैं। यही दिमागी नक्सली खुद तो हथियार नहीं उठाते है, खुद देश में सामने आकर अराजकता नहीं फैलाते हैं,खुद देश को सामने आकर नुकसान नहीं पहुंचाते हैं लेकिन युवाओं के दिमाग में देश विरोधी विचार यही डालते हैं उनको गलत रास्ते पर ले जाते हैं। इससे देश को नुकसान पहुंचता है,देश का विकास प्रभावित होता है।देश के युवाओं की जो ऊर्जा देश के विकास के काम में आनी चाहिए, वह देश को नुकसान पहुंचाने में नष्ट होती है।

पीएम का दिमागी नक्सली का तीर बिलकुल ठीक निशाने पर लगा है और जो लोग भी नक्सलियों के समर्थक रहे हैं,जो नक्सलियों का क्रांतिकारी बताते रहे हैं, जो नक्सलियों की हर तरह से मदद करते रहे हैं। जब पीएम मोदी ने देश के लोगों को दिमागी नक्सलियों से सावधान रहने को कहा है। पीएम मोदी ने किसी का नाम नहीं लिया कि कौन दिमागी नक्सली है लेकिन देश के लोग जानते हैं कि कौन लोग दिमागी नक्सली हैं और वह अपने समय में क्या कुछ करते रहे हैं। जनता जानती है कि ऐसे लोग सत्ता के साए में कैसे खेल खेलते रहे हैं, सत्ता के संरक्षण मे ऐसे लोग देश के अहम संस्थानों में जगह बनाने में सफल रहे हैं।यह खुद को बुध्दिजीवी कहते हैं,इनके विचार परिवार,समाज व देशविरोधी होते हैं,यह परिवार से लेकर देश में अपने विचारों से अराजकता फैलाने का प्रयास करते हैं।

पीएम मोदी के दिमागी नक्सली की प्रतिक्रिया तो होनी ही थी,नक्सलियों के समर्थकों ने इस पर दो तरह की प्रतिक्रिया आई है। एक तो पीएम चिदंबरम ने कहा है कि हां वह दिमागी नक्सली हैं। इसके बाद पूर्व सीएम महबूबा मुफ्ती ने कहा है कि वह दिमागी नक्सली हैं। इसके बाद केजरीवाल ने भी कहा है कि वह दिमागी नक्सली हैं। पीएम मोदी ने किसे दिमागी नक्सली कहा है यह देश के लोग जानते हैं और उनका समर्थन व सहयोग कौन लोग करते है यह भी देश के लोग जानते हैं इसलिए विपक्ष की तरफ से यह भ्रम फैलाने की कोशिश की जा रही है कि सरकार की नजर में सरकार से सवाल पूछने वाले,सरकार का विरोध करने वाले दिमागी नक्सली है। कांग्रेस नेता पी.चिदंबरम ने कहा है कि यदि सरकार की नजर में सवाल उठाना दिमागी नक्सल है तो मैं दिमागी नक्सली हूं। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा है कि पहले विरोधियों को अर्बन नक्सल और अब दिमागी नक्सली कहना सरकार की हताशा का प्रतीक है।कांग्रेस के नेता आज खुद को दिमागी नक्सली कहते वक्त यह भूल रहे हैं कि मनमोहन सरकार के समय कहा गया था कि नक्सली देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा हैं, पीएम मोदी भी तो वही कह रहे हैं कि दिमागी नक्सली आज देश के लिए खतरा है तो कांग्रेस नेता उसे मान नहीं रहे हैं और जनता में भ्रम फैला रहे हैं।

सरकार ने सवाल पूछने वाली जनता और युवाओं के लिए दिमागी नक्सली का प्रयोग नहीं किया है लेकिन विपक्ष भ्रम फैलाने के लिए इसे जनता व युवाओं से जोड़कर दिमागी नक्सलियों को बचाने का प्रयास कर रहा है। वह भ्रम फैला रहा है कि जनता व युवा सरकार से सवाल न पूछ सकें, इसलिए ऐसा कहा है,सवाल पूछने वाले दिमागी नक्सली हैं। देश की जनता और जिन इलाकों में नक्सलियों का आतंक रहा है वहां के लोग दिमागी नक्सलियों को अच्छे से पहचानते हैं कि कैसे वह नक्सलियों के समर्थन में कभी मानवाधिकार,कभी एनजीओ,कभी सेमिनार में तो कभी लेख के जरिए कैसे उनको क्रांतिकारी बताया करते थे।इसलिए विपक्ष कितना भी भ्रम फैलाए देश की जनता समझदार है, पीएम मोदी ने क्या कहा है,समझती है और क्या करना है,यह वह जानती है।

कांग्रेस नेता एक तरह से भ्रम फैला रहे हैं तो आम आदमी पार्टी (AAP) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल दूसरी तरह से भ्रम फैलाने के लिये कहा है कि व्यक्ति भारतीय जनता पार्टी (BJP) और केंद्र सरकार से सवाल करेगा और पूरे भारत में बेहतर सुविधाओं की मांग करेगा, उसे 'दिमागी नक्सल' कहा जाएगा। केजरीवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री के अनुसार, 'दिमागी नक्सल' वह व्यक्ति है जो सवाल उठाता है और शिक्षा प्रणाली में बदलाव लाना चाहता है। उनके अनुसार, जो लोग अस्पताल और सड़कों जैसी अच्छी सुविधाएं चाहते हैं, वे 'दिमागी नक्सल' हैं।जनता सच जानती है,मोदी ने जो कहा है उसे सच मानती है इसलिए आने वाले दिनों में भी वह दिमागी नक्सलियों और उनकी मदद करने वालों को सत्ता में नहीं आने देगी। चाहे वह खुद को कितना भी विकसित भारत का समर्थक बताएं।

बंटवारा 1947 : इतिहास की त्रासदी पर नहीं एकतरफा नैरेटिव पर केंद्रित फिल्म?

डॉ. अवधेश कुमार मौर्य, शिक्षाविद् व विचारक

बंटवारे की कहानी की आड़ में हिंदुओं को खलनायक बनाने की कोशिश फिल्म की सबसे बड़ी कमजोरी

14 अगस्त की तारीख अपने भीतर भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास की सबसे बड़ी मानवीय त्रासदियों में से एक को समेटे हुए है। एक ओर स्वतंत्रता की पूर्व संध्या का उल्लास था, तो दूसरी ओर विभाजन की वह विभीषिका, जिसने करोड़ों लोगों को रातोंरात अपने घर, जमीन, शहर, रिश्ते और स्मृतियां छोड़ने के लिए विवश कर दिया। लाखों लोग मारे गए, अनगिनत परिवार बिछड़ गए और असंख्य स्त्री पुरुष अपने जीवन की सबसे भयावह स्मृतियां लेकर शरणार्थी बन गए।

ऐसे विषय पर बनने वाली फिल्म से अपेक्षा स्वाभाविक रूप से बड़ी होती है। और जब फिल्म आमिर खान प्रोडक्शंस जैसे बड़े बैनर तथा राजकुमार संतोषी जैसे चर्चित निर्देशक से जुड़ी हो, तो दर्शक केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि इतिहास की संवेदनशील, गंभीर और संतुलित व्याख्या की उम्मीद करता है।

'बंटवारा 1947' इसी उम्मीद के साथ देखने बैठने वाला दर्शक अंत में एक असहज प्रश्न लेकर बाहर निकलता है—क्या यह वास्तव में बंटवारे की समग्र कहानी है या बंटवारे की पृष्ठभूमि में एक खास नैरेटिव को स्थापित करने वाली फिल्म? मेरे लिए फिल्म की सबसे बड़ी समस्या यहीं से शुरू होती है।

बंटवारे की कहानी, लेकिन किसके नजरिए से?

फिल्म की शुरूआत विस्थापन, भय, हिंसा और उजड़ते परिवारों के दृश्यों से होती है। सिकंदर मिर्जा और उसका परिवार पाकिस्तान पहुंचता है और एक नए जीवन की तलाश शुरू करता है। फिल्म का भावनात्मक संसार धीरे धीरे एक हिंदू वृद्धा माई और उसके पुराने घर के इर्द गिर्द केंद्रित हो जाता है। यहां तक कहानी में बहुत संभावनाएं थीं।

असगर वजाहत के चर्चित नाटक जिस लाहौर नइ वेख्या, ओ जम्या नइ की मूल संवेदना भी विभाजन के बीच मनुष्यता की तलाश से जुड़ी है। इसलिए फिल्म के पास अवसर था कि वह 1947 की त्रासदी को धर्म से ऊपर उठाकर मनुष्य की त्रासदी के रूप में प्रस्तुत करे। लेकिन फिल्म का नैरेटिव कई जगह इस संतुलन से दूर जाता दिखाई देता है।

हिंदुओं को खलनायक बनाने का प्रयास?

फिल्म का सबसे विवादास्पद पक्ष उसका वह लगातार दोहराया जाने वाला संवाद संसार है जिसमें हिंसा और अत्याचार को बार बार हिंदू पक्ष से जोड़कर प्रस्तुत किया जाता है। कहीं यह कहा जाता है कि हिंदुओं ने लूटा, कहीं हिंदुओं पर बलात्कार और हत्या के आरोप आते हैं, कहीं कब्जे और उत्पीड़न की बातें दोहराई जाती हैं और कहीं पड़ोसियों तक को जहर देकर मारने जैसे आरोप सामने आते हैं। एक दो बार किसी पात्र की पीड़ा या स्मृति के रूप में ऐसा संवाद आना स्वाभाविक हो सकता है। लेकिन जब एक ही प्रकार के आरोप लगातार लौटते हैं, तो वे केवल पात्र के संवाद नहीं रह जाते। वे धीरे धीरे फिल्म के नैरेटिव का हिस्सा बन जाते हैं और दर्शक के मन में एक विशेष धारणा निर्मित करने लगते हैं।

यहीं सबसे गंभीर प्रश्न उठता है

क्या बंटवारे की कहानी की आड़ में हिंदुओं को फिल्म का खलनायक बनाने की कोशिश की गई है? यह प्रश्न इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि 1947 का विभाजन किसी एक समुदाय के अपराध और दूसरे समुदाय की पीड़ा की सरल कहानी नहीं था। यह ऐसी सामूहिक त्रासदी थी जिसमें हिंदू, मुस्लिम और सिख—तीनों समुदायों के निर्दोष लोग हिंसा के शिकार हुए। इसलिए हिंदुओं द्वारा की गई हिंसा को दिखाना गलत नहीं है। इतिहास में जो हुआ, उसे दिखाया ही जाना चाहिए। लेकिन इतिहास के साथ ईमानदारी की पहली शर्त यही है कि एक पक्ष के अपराध को दिखाते समय दूसरे पक्ष के अपराध, पीड़ा और विस्थापन को अदृश्य न कर दिया जाए।

समस्या हिंसा दिखाने में नहीं, हिंसा के चयन में है

फिल्म की आलोचना करते समय यह स्पष्ट करना जरूरी है कि किसी भी समुदाय द्वारा की गई हिंसा को छिपाने की मांग नहीं की जा रही।

यदि किसी हिंदू ने हत्या की, लूट की, बलात्कार किया या किसी निर्दोष को सताया, तो उसे दिखाया जाना चाहिए। लेकिन यही नियम मुस्लिम समुदायों पर भी लागू होना चाहिए।

निराश करने वाली फिल्म

विभाजन के इतिहास में पश्चिमी पंजाब, लाहौर और आसपास के क्षेत्रों में हिंदू और सिखों ने भयावह हिंसा झेली। दूसरी ओर पूर्वी पंजाब और भारत के विभिन्न हिस्सों में मुस्लिम समुदाय के लोग भी हिंसा के शिकार हुए। शरणार्थी ट्रेनों पर दोनों दिशाओं में हमले हुए। घर जले, बस्तियां उजड़ीं और परिवार समाप्त हो गए। इसलिए विभाजन की वास्तविक कहानी को केवल इस सूत्र में नहीं बांधा जा सकता कि एक समुदाय अत्याचारी था और दूसरा केवल पीड़ित। विभाजन में पीड़ित भी अनेक थे और अपराधी भी अनेक। सबसे बड़ी त्रासदी यह थी कि साम्प्रदायिक उन्माद ने पड़ोसी को पड़ोसी का दुश्मन बना दिया। फिल्म यहीं संतुलन खोती हुई दिखाई देती है। हिंदुओं को संबोधित करते हुए बार बार दोहराए गए नकारात्मक संवाद परेशान करते हैं?

सिनेमा की भाषा अत्यंत प्रभावशाली होती है। कोई बात एक बार कही जाए तो वह पात्र की निजी अनुभूति हो सकती है। वही बात बार बार कही जाए तो वह दर्शक के लिए एक स्थापित निष्कर्ष का रूप लेने लगती है। 'बंटवारा 1947' में यही समस्या कई जगह दिखाई देती है। फिल्म के संवादों में एक ही प्रकार का नकारात्मक आरोप बार बार लौटता है। परिणाम यह होता है कि दर्शक को विभाजन की जटिलता के बजाय एक विशेष दिशा में ले जाया जाता हुआ महसूस होता है। ऐसा लगता है कि पटकथा दर्शक को यह बताने में अधिक रुचि रखती है कि कौन दोषी था, बजाय इसके कि वह यह दिखाए कि विभाजन ने मनुष्य को किस तरह मनुष्य के विरुद्ध खड़ा कर दिया था। यहीं फिल्म के प्रति असहमति पैदा होती है। इतिहास पर आधारित सिनेमा को दर्शक के सामने प्रश्न रखने चाहिए, निष्कर्ष थोपने नहीं चाहिए।

फिल्म का सबसे मजबूत पक्ष : इंसानियत

विडंबना यह है कि फिल्म के भीतर ही वह मानवीय संभावना मौजूद है जो इसे एक महान फिल्म बना सकती थी। आरंभ के डायलॉग जो बार-बार हिंदू लोग लूट रहे हैं हिंदू अत्याचार कर रहे हैं,यह नेगेटिव नॉरेटिव दर्शकों को झुंझला देता है।

सिकंदर मिर्जा का एक हिंदू वृद्धा की रक्षा के लिए खड़ा होना, अपनी ही कौम के कट्टरपंथियों का विरोध करना और 'माई' को उसके धर्म के कारण नहीं, बल्कि इंसान होने के कारण सम्मान देना—फिल्म का सबसे प्रभावशाली पक्ष है। कोई मजहब बुरा नहीं होता, अच्छा या बुरा इंसान होता है। मां को हिंदू मुसलमान में मत बांटिए। जैसे संवाद फिल्म के उस मानवीय संदेश को सामने लाते हैं जिसकी आज भी जरूरत है। यही कारण है कि फिल्म को पूरी तरह खारिज करना भी उचित नहीं होगा। समस्या उसके संदेश में नहीं, बल्कि उस संदेश तक पहुंचने के लिए चुने गए असंतुलित रास्ते में है। यदि फिल्म शुरूआत से ही यह दिखाती कि हिंसा किसी एक धर्म की संपत्ति नहीं थी और फिर सिकंदर मिर्जा के माध्यम से इंसानियत को साम्प्रदायिकता के ऊपर स्थापित करती, तो उसका प्रभाव कहीं अधिक व्यापक और विश्वसनीय होता।

शबाना आजमी : फिल्म की सबसे मानवीय धुरी

शबाना आजमी फिल्म की भावनात्मक शक्ति हैं। 'माई' के रूप में उनका अभिनय फिल्म को वह गहराई देता है जिसकी विभाजन जैसे विषय को आवश्यकता थी। माई केवल एक वृद्ध हिंदू महिला नहीं है। वह घर, स्मृति, मिट्टी और अपनी जड़ों का प्रतीक बन जाती है। उसका अपने घर से जाने से इनकार केवल संपत्ति पर अधिकार का प्रश्न नहीं है। वह उस मनुष्य की आवाज है जिसे इतिहास ने उसकी इच्छा के विरुद्ध विस्थापित कर दिया। यहीं फिल्म अपने सबसे मानवीय रूप में दिखाई देती है। शबाना आजमी में बुजुर्ग में का किरदार बेहतरीन ढंग से निभाया है। बुजुर्ग हिंदू महिला की आस्था सामंजस्य रिश्ते सहजता सरलता और विश्वास उस किरदार में दिखाई देता है।

सनी देओल : अभिनय से अधिक एक परिचित किरदार

सिकंदर मिर्जा के रूप में सनी देओल एक अलग तरह का किरदार निभाने का प्रयास करते हैं। उनका आक्रोश, आवाज और संवाद अदायगी प्रभाव पैदा करती है। लेकिन दर्शक सनी देओल को देखते हुए उनकी पुरानी छवियों से पूरी तरह बाहर नहीं निकल पाता। कहीं न कहीं गदर का तारा सिंह इस किरदार के पीछे चलता दिखाई देता है।

उनकी लोकप्रियता फिल्म के लिए निश्चित रूप से बड़ी ताकत है। लेकिन तारा सिंह के बिल्कुल उलट किरदार को दर्शन पचा नहीं पता। थिएटर में उनके संवादों पर तालियां और प्रतिक्रियाएं इसका प्रमाण हैं। लेकिन यही लोकप्रियता एक चुनौती भी बन जाती है—दर्शक कई बार चरित्र से अधिक अभिनेता को देखने लगता है।

करण देओल : विरासत के दबाव में अपनी पहचान की तलाश

करण देओल के लिए यह भूमिका महत्वपूर्ण है। लेकिन उनके अभिनय का मूल्यांकन करते समय यह भी ध्यान रखना होगा कि वे सनी देओल के पुत्र हैं। दर्शक स्वाभाविक रूप से उनकी तुलना उनके पिता से करता है। फिल्म में उनका काम अपनी अलग पहचान बनाने की कोशिश करता दिखाई देता है, लेकिन अभी उनके सामने अपनी स्वतंत्र अभिनय शैली स्थापित करने की चुनौती है।

पटकथा : मूल संवेदना और वैचारिक विस्तार का संघर्ष

फिल्म जिस मूल नाटक से प्रेरित है, उसकी सबसे बड़ी शक्ति मनुष्यता है। मूल कथा का प्रश्न था—क्या मनुष्य अपने मजहब से बड़ा हो सकता है? फिल्म के पास इससे भी बड़ा प्रश्न उठाने का अवसर था—विभाजन के 79 वर्ष बाद क्या हम इतिहास को नफरत की नजर से देखेंगे या इंसानियत की नजर से? दुर्भाग्य से फिल्म इस प्रश्न को उतनी ताकत से नहीं उठा पाती जितनी ताकत से उठा सकती थी। कहानी का दायरा धीरे धीरे सिकंदर मिर्जा और माई के घर तक सीमित हो जाता है, जबकि शीर्षक 'बंटवारा 1947' दर्शक से कहीं अधिक व्यापक कहानी की अपेक्षा करता है। 'बंटवारा 1947' शीर्षक अपने आप में बहुत बड़ी अपेक्षा पैदा करता है जब फिल्म का नाम 'बंटवारा 1947' हो तो दर्शक केवल एक घर की कहानी देखने नहीं आता। वह लाहौर की कहानी के साथ अमृतसर की कहानी भी देखना चाहता है।

वह पाकिस्तान जाने वाले परिवार की पीड़ा के साथ भारत आने वाले परिवार की पीड़ा भी देखना चाहता है। वह उन ट्रेनों की कहानी देखना चाहता है जो यात्रियों से भरी रवाना हुई और रास्ते में लाशों में बदल गई। वह उस मां की कहानी देखना चाहता है जिसने अपना बेटा खोया, उस बेटी की कहानी जिसने अपना पिता खोया और उस परिवार की कहानी जिसने एक रात में अपना सब कुछ खो दिया। लेकिन फिल्म की कहानी का बड़ा हिस्सा एक सीमित पारिवारिक संघर्ष में सिमट जाता है। इसलिए शीर्षक और फिल्म के वास्तविक विस्तार के बीच एक बड़ा अंतर महसूस होता है।

पाकिस्तान के प्रति भावनात्मक लगाव का नैरेटिव?

फिल्म देखने के बाद एक और सवाल मन में उठता है। क्या यह कहानी अनजाने में पाकिस्तान और वहां छूट गए घरों के प्रति भावनात्मक लगाव को अधिक प्रमुखता देती है, जबकि भारत आए करोड़ों विस्थापितों की पीड़ा को उतनी व्यापकता नहीं मिलती? यही कारण है कि यह फिल्म के संतुलन पर गंभीर प्रश्न खड़ा करता है।

बंटवारा केवल उन लोगों की कहानी नहीं था जो पाकिस्तान में रह गए। यह उन करोड़ों लोगों की भी कहानी था जो अपना सब कुछ छोड़कर भारत आए। उनके लिए पाकिस्तान केवल स्मृति नहीं था, वह खोया हुआ घर था। लेकिन भारत भी उनके लिए केवल गंतव्य नहीं था—वह शरण, पुनर्निर्माण और अस्तित्व की भूमि था। फिल्म यदि इस पूरे भावनात्मक भूगोल को समेटती तो उसका प्रभाव कहीं अधिक गहरा होता।

आमिर खान प्रोडक्शंस और राजकुमार संतोषी से अपेक्षा अधिक थी

आमिर खान प्रोडक्शंस और राजकुमार संतोषी जैसे नाम अपने आप में एक मानक स्थापित करते हैं। इसी कारण इस फिल्म से अपेक्षा सामान्य फिल्म से कहीं अधिक थी। दर्शक केवल बड़े सितारे और बड़े संवाद नहीं चाहता था। वह चाहता था—शोध, ऐतिहासिक संवेदनशीलता, वैचारिक ईमानदारी और विभाजन की समग्र तस्वीर। दुर्भाग्य से फिल्म इन अपेक्षाओं को पूरी तरह पूरा नहीं कर पाती। फिल्म देखने के बाद सबसे बड़ी निराशा यही होती है कि इतने बड़े विषय को लेकर भी दर्शक को बंटवारे की समग्रता का अनुभव नहीं हो पाता।

क्या दर्शक पैसे और समय की कीमत पाता है?

सनी देओल की लोकप्रियता, शबाना आजमी का अभिनय, भावनात्मक दृश्य और कुछ प्रभावशाली संवाद निश्चित रूप से फिल्म को देखने योग्य तत्व देते हैं। लेकिन एक फिल्म का मूल्यांकन केवल उसके अच्छे दृश्यों से नहीं होता। फिल्म खत्म होने के बाद दर्शक अपने साथ क्या लेकर बाहर निकलता है—यह ज्यादा महत्वपूर्ण है। 'बंटवारा 1947' देखने के बाद एक तरह का खालीपन महसूस होता है। दर्शक बंटवारे की पूरी कहानी देखने गया था, लेकिन उसे उसका एक सीमित और कई जगह असंतुलित संस्करण दिखाई देता है। वह भावुक जरूर होता है, लेकिन संतुष्ट नहीं। वह कुछ दृश्यों पर तालियां बजाता है, लेकिन इतिहास की पूरी तस्वीर लेकर थिएटर से बाहर नहीं निकलता। यही वह बिंदु है जहां दर्शक को लगता है कि फिल्म ने उसके समय और टिकट की कीमत के अनुपात में वह अनुभव नहीं दिया जिसकी उससे अपेक्षा थी।

अंततः : इतिहास को जोड़ना चाहिए, फिर से बांटना नहीं

'बंटवारा 1947' का मानवीय संदेश मूलतः मूल्यवान है। एक मुस्लिम परिवार द्वारा हिंदू वृद्धा की रक्षा, कट्टरता के विरुद्ध खड़ा होना और इंसानियत को मजहब से ऊपर रखने का प्रयास—ये फिल्म के मजबूत पक्ष हैं। लेकिन मानवता का संदेश तभी विश्वसनीय और प्रभावशाली बनता है जब इतिहास की पूरी पीड़ा को समान ईमानदारी से स्वीकार किया जाए। हिंदुओं द्वारा की गई हिंसा को दिखाना गलत नहीं है। लेकिन यदि वही हिंसा बार बार दोहराई जाए और उससे ऐसा वातावरण बने जिसमें हिंदू समाज विभाजन का प्रमुख अपराधी दिखाई देने लगे, जबकि दूसरे पक्ष की हिंसा और पीड़ा पृष्ठभूमि में चली जाए, तो दर्शक को असंतुलन महसूस होना स्वाभाविक है। इतिहास में अपराधी का कोई धर्म नहीं होता, अपराध का होता है। 1947 में हिंदू मरे, मुस्लिम मरे, सिख मरे। घर सभी के उजड़े। माताएं सभी पक्षों की रोईं। बच्चे सभी समुदायों के अनाथ हुए। शरणार्थी सभी बने। इसलिए 1947 का सबसे बड़ा विलेन कोई एक धर्म नहीं था।

सबसे बड़ा विलेन था—नफरत।

और बंटवारे पर बनने वाली फिल्म का सबसे बड़ा दायित्व यही होना चाहिए कि वह उस नफरत को पहचाने, न कि उसके लिए किसी एक समुदाय को स्थायी खलनायक बना दे। 'बंटवारा 1947' की सबसे बड़ी विडंबना शायद यही है कि फिल्म इंसानियत को मजहब से ऊपर रखने की बात करती है, लेकिन अपने नैरेटिव के कई हिस्सों में इतिहास को उतनी समग्रता से नहीं देख पाती। बंटवारा जमीन का ही नहीं था।

घरों का था, रिश्तों का था, स्मृतियों का था और विश्वास का था। इसलिए सिनेमा का काम उन स्मृतियों को फिर से किसी एक दिशा में बांटना नहीं, बल्कि उन्हें समझना और जोड़ना होना चाहिए। क्योंकि 1947 की सच्ची कहानी यही है— बंटवारे ने देश को बांटा था, लेकिन नफरत ने इंसान को इंसान से बांटा था। और यदि 'बंटवारा 1947' इस अंतर को अधिक गहराई, संतुलन और ऐतिहासिक ईमानदारी के साथ सामने रख पाती, तो यह केवल एक फिल्म नहीं, बल्कि विभाजन की स्मृति को समझने वाला एक महत्वपूर्ण सिनेमाई दस्तावेज बन सकती थी।

आस्था का मंदिर क्यों बन जाता है मौत का कुआँ?

अशोक भाटिया

सभ्यता के विकास के साथ ही भारत में मंदिर, चेतना और आध्यात्मिक शांति के सर्वोच्च केंद्र रहे हैं। जब एक आम श्रद्धालु अपने घर से किसी भी तीर्थस्थल की ओर कदम बढ़ाता है, तो उसके मन में केवल अगाध श्रद्धा, आत्मिक संतोष और ईश्वर के दर्शन की लालसा होती है। लेकिन क्या वजह है कि हाल के वर्षों में भारत के, और विशेषकर बिहार के पवित्र धार्मिक परिसर अचानक मौत के कुएँ में तब्दील हो जाते हैं? क्यों आस्था के जयकारों के बीच अचानक चीखें, रुदन और अपनों को खोने का हाहाकार गूंजने लगता है? बिहार के लखीसराय स्थित अशोकधाम मंदिर में सावन के पावन महीने में घटित हुई ताजा विभीषिका ने एक बार फिर हमारी व्यवस्था के खोखलेपन, प्रशासनिक ढुलमुल रवैये और आपदा प्रबंधन के दावों की धंज्जियाँ उड़ाकर रख दी हैं। एक ऐसे समय में जब विज्ञान और तकनीकी प्रबंधन के जरिए दुनिया लाखों-करोड़ों की भीड़ को उंगली पर नचा सकती है, हमारे यहाँ त्योहारों और धार्मिक अवसरों पर उमड़ने वाली भीड़ को भगवान भरोसे छोड़ दिया जाता है। यह हादसा कोई पहला नहीं है और न ही अप्रत्याशित है; यह उन दर्जनों चेतावनियों की कड़वी कड़ी है जिन्हें नजरअंदाज करने की हमें आत्मघाती आदत हो चुकी है।

सावन मास के तीसरे सोमवार की सुबह, जब पूरा देश सूर्योदय के साथ महादेव के जलाभिषेक की तैयारी कर रहा था, लखीसराय का इंद्रदमनेश्वर महादेव (अशोकधाम) मंदिर परिसर चीखों से दहल उठा। सावन के इस पवित्र सोमवार पर बाबा भोलेनाथ पर जल चढ़ाने के लिए करीब 50,000 श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी हुई थी। मंदिर परिसर खचाखच भरा हुआ था, कतारें किलोमीटर लंबी थीं और प्रशासनिक चौकसी सिर्फ कागजों तक सीमित थी। सुबह करीब 6:30 से 6:45 के बीच जब यह हादसा हुआ, तो इसके कारणों को लेकर प्रशासन और जमीनी हकीकत यानी चश्मदीदों के बयानों में एक बड़ा विरोधाभास देखने को मिला।

लखीसराय के जिलाधिकारी शैलेंद्र कुमार और पुलिस प्रशासन का तर्क है कि सुबह के समय दो स्थानीय रेलगाड़ियों के अशोकधाम हॉल्ट पर पहुँचने से श्रद्धालुओं का दबाव अचानक अप्रत्याशित रूप से बढ़ गया था। प्रशासन के अनुसार, पुरुषों की कतार के दाहिनी ओर स्थित एक बिजली का खंभा अचानक गिर गया, जिससे भीड़ में यह अफवाह फैल गई कि कतार पर बिजली का चालू तार गिर गया है, जबकि वह केवल एक केबल वायर था। इसी अफवाह के बीच कुछ युवकों ने जबरन आगे बढ़ने की कोशिश में बैरिकेडिंग तोड़ दी, जिससे कतार में खड़ी महिलाएं एक-दूसरे के ऊपर गिर गईं और भगदड़ मच गई। इस भीषण कुप्रबंधन और हादसे में 8 श्रद्धालुओं की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई, जबकि 12 से ज्यादा लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। मारे गए लोगों में महिलाओं की संख्या अधिक थी, जो कतारों में खड़ी थीं। इस पूरी घटना ने यह साफ कर दिया कि जब बुनियादी बिजली सुरक्षा, बैरिकेडिंग की मजबूती और भीड़ नियंत्रण जैसे प्राथमिक इंतजाम ही दुरुस्त न हों, तो प्रशासनिक दावों की पोल खुलने में चंद सेकंड ही लगते हैं।

लखीसराय की यह त्रासदी कोई अकेली घटना नहीं है, बल्कि बिहार में पिछले कुछ वर्षों में धार्मिक स्थलों पर सुरक्षा के मोर्चे पर हुई आपराधिक लापरवाहियों का एक लंबा और खूनी इतिहास रहा है। यदि हम अतीत के पन्नों को पलटें, तो पाएंगे कि हर हादसे का ढर्रा बिल्कुल एक जैसा रहा है—भीड़ का अत्यधिक जुटना, किसी अफवाह या दुर्घटना का होना, और अंततः प्रशासन का लाचार होकर हाथ खड़े कर देना। उदाहरण के लिए, 12 अगस्त 2024 को जहानाबाद जिले के मखदूमपुर में स्थित बराबर पहाड़ी पर बने प्राचीन बाबा सिद्धनाथ मंदिर में ऐसी ही एक भयावह भगदड़ मची थी। सावन के सोमवार के अवसर पर ही आधी रात के बाद करीब 1 से 1:30 बजे के बीच यह हादसा हुआ था। पहाड़ी की संकरी सीढ़ियों और रास्तों पर हजारों श्रद्धालु जल चढ़ाने के लिए ऊपर चढ़ रहे थे, जबकि दर्शन कर चुके सैकड़ों लोग नीचे उतर रहे थे। आने और जाने का रास्ता एक होने और बेहद संकरा होने के कारण दबाव पहले से ही चरम पर था। इसी बीच स्थानीय फूल विक्रेताओं के बीच किसी बात को लेकर लाठी-डंडों से मारपीट हो गई, जिसे भीड़ ने पुलिस का लाठीचार्ज समझ लिया। इस एक अफवाह ने पहाड़ी पर मौत का तांडव शुरू कर दिया और लोग अंधेरे में संकरी सीढ़ियों पर एक-दूसरे को कुचलते हुए भागने लगे, जिससे 7 निर्दोष श्रद्धालुओं की जान चली गई थी।

इसी तरह, चैत्र मास के आखिरी मंगलवार यानी 31 मार्च 2026 को नालंदा जिले के बिहार शरीफ के मघरा इलाके में स्थित माँ शीतला माता मंदिर में एक और हृदयविदारक घटना घटी थी। शीतला अष्टमी के पावन अवसर पर सुबह-सुबह भारी संख्या में महिलाएं पूजा-अर्चना के लिए जुटी थीं। भोर से ही मंदिर प्रांगण में महिलाओं की कतारें लगी थीं और अचानक अत्यधिक भीड़ व कुप्रबंधन की वजह से अफरा-तफरी मच गई। सैकड़ों लोग एक क्षण में नियंत्रण खो बैठे और देखते ही देखते भगदड़ जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई। चश्मदीदों ने यहाँ भी प्रशासन की विफलता और पुलिस बल की भारी कमी को हादसे का ज़िम्मेदार ठहराया था, जिसके कारण 8 महिलाओं की कुचलने और दम घुटने से मौत हो गई थी। सुरक्षा में चूक और भीड़ नियंत्रण के अभाव का एक और वीभत्स उदाहरण अक्टूबर 2023 में महा नवमी की रात को गोपालगंज में देखने को मिला था। वहाँ के प्रसिद्ध राजा दल दुर्गा पूजा पंडाल में भारी संख्या में दर्शनार्थी उमड़े थे। पंडाल के मुख्य द्वार पर अत्यधिक भीड़ हो जाने और प्रवेश व निकास की सही व्यवस्था न होने के कारण अचानक भगदड़ मच गई थी। पुलिस की प्राथमिक जाँच में स्पष्ट हुआ था कि उस विशाल और संवेदनशील पंडाल के गेट पर भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पुलिस कर्मियों की तैनाती नहीं की गई थी, जिसके चलते दो महिलाओं और एक मासूम बच्चे की कुचलकर मौत हो गई थी।

इन सभी पुरानी और नई घटनाओं का बारीकी से विश्लेषण करने पर कुछ ऐसे साझा और गंभीर कारण उभरकर सामने आते हैं, जो यह साबित करते हैं कि ये मौतें प्राकृतिक आपदाएं नहीं, बल्कि प्रशासनिक और ढांचागत विफलताओं के कारण हुए मानव-निर्मित अपराध हैं। इसके अलावा, किसी भी भीड़भाड़ वाले स्थान पर एक छोटी सी अफवाह बारूद में चिंगारी का काम करती है। जब अफवाह फैलती है, तो लोगों में जान बचाने के लिए भागने की स्थिति बन जाती है। ऐसे समय में भीड़ को शांत करने के लिए मंदिरों में न तो कोई प्रभावी लाउडस्पीकर सिस्टम होता है और ना ही प्रशासन तुरंत घोषणाएं करके स्थिति को संभालता है। साथ ही, बिहार राज्य धार्मिक न्यास बोर्ड और स्थानीय जिला प्रशासन के बीच अक्सर जिम्मेदारी को लेकर खींचतान चलती रहती है। मंदिर समितियां अपनी कमाई और चढ़ावे पर तो पूरा नियंत्रण रखती हैं, लेकिन जब बात बुनियादी सुरक्षा व्यवस्था या सीसीटीवी कैमरे लगाने की आती है, तो वे सारा जिम्मा पुलिस-प्रशासन पर मढ़ देती हैं।

धार्मिक स्थलों पर हादसों का एक और छिपा हुआ लेकिन कड़वा सच वीआईपी संस्कृति है। जब आम श्रद्धालु घंटों भूखे-प्यासे कतारों में खड़े अपनी बारी का इंतजार कर रहे होते हैं, तब प्रशासनिक अमला और मंदिर के रसूखदार लोग वीआईपी दर्शन कराने में व्यस्त होते हैं। इस चक्कर में आम कतारों को रोक दिया जाता है, जिससे पीछे से आ रही भीड़ का दबाव आगे की कतारों पर असहनीय हो जाता है।

यदि हम वास्तव में चाहते हैं कि भविष्य में कोई भी मंदिर, पंडाल या तीर्थस्थल मौत का कुआँ न बने, तो हमें तात्कालिक लीपापोती से ऊपर उठकर कड़े और ठोस संरचनात्मक सुधार करने होंगे। इसके लिए सबसे पहले अनिवार्य डिजिटल पास और रियल-टाइम हेड-काउंट सिस्टम लागू करना होगा। जैसे अमरनाथ यात्रा या तिरुपति बालाजी में दर्शन की एक निश्चित संख्या तय होती है, वैसे ही बिहार के बड़े मंदिरों में भी प्रतिदिन दर्शनार्थियों की अधिकतम सीमा तय होनी चाहिए। रेलवे स्टेशनों और ट्रेनों के समय के साथ समन्वय बिठाकर भीड़ के आगमन का सटीक आकलन किया जाना चाहिए। इसके साथ ही, प्रत्येक बड़े धार्मिक आयोजन से कम से कम एक महीने पहले जिला प्रशासन, विद्युत विभाग और अग्निशमन विभाग द्वारा पूरे परिसर का सेफ्टी ऑडिट अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए। कतारों वाले रास्तों से बिजली के तारों को पूरी तरह अंडरग्राउंड किया जाना चाहिए ताकि करंट लगने जैसी घटनाएं दोबारा न हों।

आस्था इंसान को जीवन जीने का संबल देती है, वह जान लेने की वजह नहीं बननी चाहिए। जब तक देश का नागरिक, समाज और प्रशासनिक तंत्र इस कड़वी हकीकत को स्वीकार नहीं करेंगे कि कुप्रबंधन ही असली हत्यारा है, तब तक प्रार्थनाओं के स्वर ऐसे ही असमय चीखों में बदलते रहेंगे। लखीसराय, जहानाबाद और नालंदा की त्रासदियां हमारे सामूहिक विवेक पर एक गहरा दाग हैं। अब समय आ गया है कि हम आस्था के इन पावन आलों को प्रशासनिक सतर्कता और सख्त नियमों से सुरक्षित करें, ताकि कोई भी माँ, बहन या भाई ईश्वर के दर से कफन में लिपटकर वापस न लौटे। व्यवस्था को अपनी नींद से जागना ही होगा, वरना इतिहास हमें कभी माफ नहीं करेगा।

जब घर पर न लगे मन, तो इन 3 हॉबीज से संवारें अपना खाली वक्त

घर पर खाली समय में बोरियत को दूर करने के लिए तीन माइंडफुल हॉबीज अपनाई जा सकती हैं। जानते हैं ये तीनों एक्टिविटी कैसे आपको फायदो पहुंचा सकती हैं?

जब अपनी बिजी लाइफ में से हमें थोड़ा सा खाली वक्त मिलता है, तो घर पर बैठे-बैठे मन अजीब सी बोरियत या उदासी से घिर जाता है। ऐसे समय को ज्यादातर महिलाएं फोन स्क्रॉल करने में बिताती है। जबकि, खुद को किसी क्रिएटिविटी और शांत काम में लगाना, मानसिक सेहत के लिए वरदान साबित होता है। बता दें, कुछ ऐसी माइंडफुल हॉबीज हैं, जो न सिर्फ आपका बेहतरीन टाइमपास कराएंगी, बल्कि आपके अंदर एक नई पॉजिटिव एनर्जी और खुशी भी लेकर आएंगी। ऐसे में इनके बारे में पता होना जरूरी है। आज हम आपको बताएंगे कि आप खाली समय में किन चीजों को अपनी हॉबीज बना सकती हैं।

गार्डनिंग

घर के खाली कोने या बालकनी में पेड़-पौधे लगाना न केवल आपके मन को शांत कर सकता है बल्कि ये एक सबसे खूबसूरत तरीका है, खुद को खुश रखना। जब आप मिट्टी को छूते हैं, बीजों को बोते हैं और उन्हें रोज बढ़ते हुए देखते हैं, तो इससे स्ट्रेस तेजी से कम होता है। गार्डनिंग हमें नेचर से जोड़ती है। सुबह-सुबह अपने हाथ से उगाए गए फूलों या हरी-भरी पत्तियों को देखना आपके पूरे दिन को ताजगी से भर देता है।

जर्नलिंग

जर्नलिंग का सीधा मतलब है अपनी फीलिंग, सोच और एक्सपीरियंस को एक डायरी में लिखना है। कई बार घर पर अकेले रहने से दिमाग में विचारों का तूफान चलने लगता है। ऐसे में जब आप पेन उठाकर अपने दिल की बात कागज पर लिखते हैं, तो मन का बोझ पूरी तरह हल्का हो जाता है। आप इसमें अपने दिनभर के अच्छे काम, अपनी फ्यूचर प्लानिंग या उन चीजों की लिस्ट बना सकते हैं, जिनके लिए मन से खुश हैं। इससे आपका कॉन्फिडेंस बढ़ेगा।

एडल्ट कलरिंग

कलरिंग या रंग भरना सिर्फ बच्चों का खेल नहीं है, बल्कि आजकल बड़ों के लिए एडल्ट कलरिंग बुक्स बेहद फेमस हो रही हैं। खूबसूरत डिजाइनों (जैसे मंडाला आर्ट) में अपनी पसंद के रंग भरना एक थेरेपी की तरह काम करता है। जब आप रंग भरते हैं, तो आपका दिमाग पूरी तरह एकाग्र हो जाता है और फालतू बातें नहीं सोचता है। यह आपकी क्रिएटिविटी को जगाने का एक अच्छा तरीका है।

सावन आते ही लौट आती हैं ये परंपराएं

वो मान्यताएं जिन्हें आज भी लोग शौक से निभाते हैं

आज किसी से पूछो की सावन में क्या-क्या होता है, तो यकीनन उत्तर कावड़ यात्रा और शिव भक्ति होगा, लेकिन आपको बता दें कि यह पर्व प्रकृति से जुड़ने, रिश्तों में मिठास घोलने और खुशियां मनाने का भी है।

सावन के महीने को भक्ति, हरियाली, सुख-समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। पहले गांवों में इस समय जगह-जगह पर झूले लगाए और लोकगीत गाए जाते थे। हालांकि, बदलते समय के साथ पुरानी ये परंपराएं अब गुम सी होती जा रही हैं। आज हम इस लेख में आपको उन पुरानी परंपराओं और मान्यताओं के बारे में बताने जा रहे हैं, जो इस महीने की जान हैं।

सावन के झूले और कजरी के गीत

पुराने समय में गांव और कस्बें में लड़कियां और महिलाएं एक साथ एकत्र होकर झूला झूलती थीं और कजरी गाया करती थीं। सावन आते ही बाग-बगीचों और घरों के आंगनों में पेड़ों की मजबूत डालियों पर झूले डाल दिए जाते हैं। हालांकि, पहले के मुकाबले अब ये परंपराएं कुछ ही जगहों पर देखने को मिलती हैं। मगर जो बात बड़े पेड़ों पर लगे लकड़ी के पटरे वाले झूले और पोंग मारने में हुआ करता था वह गायब सा हो गया है।

हाथों में हरी चूड़ियां और मेहंदी

सावन में चारों तरफ हरा-भरा दिखाई देता है। इस हरे रंग को समृद्धि, सौभाग्य और प्रकृति के प्रति आभार का प्रतीक माना जाता है। यही कारण है कि सावन के महीने में सुहागिन महिलाएं और लड़कियां हाथों में हरी चूड़ियां पहनती हैं और मेहंदी लगाती हैं।

घेवर बनाने की परंपरा

सावन के महीने का जायका घेवर के बिना अधूरा माना जाता है। उत्तर भारत में सावन के दौरान ही घेवर बनाया और खाया जाता है। इस महीने में सावन की तीज पर नवविवाहित बेटियों के ससुराल में मायके से घेवर, कपड़े, चूड़ियां और शृंगार का सामान भेजने की सदियों पुरानी परंपरा है। यह रिवाज रिश्तों को मजबूत करने और बेटी के प्रति प्यार जाहिर करने का एक सुंदर तरीका है।

सात्विक जीवन और सावन के सोम

सावन के महीने में खान-पान को लेकर भी विशेष नियम निभाए जाते हैं। लोग पूरे महीने प्याज, लहसुन, मांस-मदिरा से दूर रहकर सात्विक भोजन ग्रहण करते हैं। सावन के सोमवार के व्रत रखने की परंपरा बहुत पुरानी है। इसके पीछे धार्मिक मान्यता तो है ही, साथ ही स्वास्थ्य संबंधी कारण भी है वर्षा ऋतु में पाचन क्रिया धीमी हो जाती है, इसलिए सात्विक और हल्का भोजन करने की सलाह दी जाती है।

सावन में घर पर कैसे डालें झूला

आप सावन में अपने घर पर भी झूला डाल सकती हैं। हम आपको आसान तरीका बता रहे हैं-

- **सही जगह चुनें:** मजबूत पेड़ की डाल, मजबूत छत का हुक या लोहे की ग्रिल।
- **मजबूत रस्सी चुनें:** नायलॉन, सूती या जूट की मोटी रस्सी लें।
- **लकड़ी की पटरी या तख्ता:** बैठने के लिए मजबूत लकड़ी का बोर्ड लें।
- **पटरी में छेद करें** बोर्ड के दोनों ओर रस्सी बांधने के लिए दो-दो छेद बनाएं।
- **रस्सी को मजबूती से बांधें:** अब तख्ते और हुक पर सेफ्टी नॉट (मजबूत गांठ) लगाएं।
- **सजावट करें:** गेंदे के फूलों, आम के पत्तों या सुंदर कपड़ों से झूले को सजाएं।
- **सेफ्टी चेक करें:** झूले पर बैठने से पहले थोड़ा वजन डालकर मजबूती जरूर चेक करें।

हरे कपड़े और सुहाग के त्योहार

सावन में पड़ने वाली हरियाली तीज और नाग पंचमी जैसे त्योहारों पर महिलाएं विशेष रूप से हरे रंग की साड़ियां या पारंपरिक परिधान पहनती हैं। इस दिन महिलाएं माता पार्वती और भगवान शिव की पूजा करके अपने परिवार की सुख-समृद्धि और पति की लंबी उम्र की कामना करती हैं।

कांवड़ यात्रा होती है बेहद खास

सावन की सबसे बड़ी और भव्य परंपराओं में से एक है कांवड़ यात्रा। शिवभक्त नंगे पैर गंगाजी या पवित्र नदियों से जल भरकर पैदल यात्रा करते हैं और भगवान शिव के ज्योतिर्लिंगों या स्थानीय शिवालयों में जलाभिषेक करते हैं। यह परंपरा अनुशासन, त्याग, भक्ति और अटूट विश्वास का उदाहरण है।

सावन में आखिर क्यों हर घर में डाला जाता है झूला

सावन का महीना आते ही चारों ओर हरियाली छा जाती है। पेड़ों पर नए पत्ते आ जाते हैं। मौसम सुहावना हो जाता है। इस दौरान मंदिर से लेकर घरों तक में शिवभक्ति का माहौल रहता है। वहीं, एक और चीज है, जो सावन की पहचान मानी जाती है और वह झूला है। आपने देखा होगा कि सावन में लोगों के घरों में झुले डाल दिए जाते हैं। महिलाएं और लड़कियां सज-धजकर झूला झूलती हैं, सावन के गीत गाती हैं। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि आखिर सावन में झूला लगाने की परंपरा कैसे शुरू हुई? इसके पीछे सिर्फ मौसम ही नहीं बल्कि धार्मिक मान्यताएं भी जुड़ी हुई हैं।

सावन को हरियाली, खुशियों और उत्सव का महीना माना जाता है। इस समय मौसम ठंडा और सुहावना होता है। इसलिए पुराने समय से लोग पेड़ों पर झूले डालकर परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताते थे। खासकर महिलाएं और लड़कियां सावन में झूला झूलते हुए लोकगीत गाती थीं। धीरे-धीरे यही परंपरा सावन के सबसे खास रीति-रिवाजों में शामिल हो गई।

माता पार्वती से जुड़ी है सावन में झूला झूलने की परंपरा

धार्मिक मान्यता है कि भगवान शिव ने सावन के महीने में माता पार्वती के लिए झूला लगाया था और उन्हें प्रेम से झूला झुलाया था। इसी वजह से झूला पति-पत्नी के बीच प्यार, सम्मान और अच्छे रिश्ते का प्रतीक भी माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि जो दंपति सावन में साथ मिलकर झूला झूलते हैं, उनके रिश्ते में अपनापन और प्रेम बना रहता है।

हालांकि, यह धार्मिक मान्यता है और अलग-अलग जगहों पर इसे अलग तरीके से माना जाता है। एक और कहावत सुनने को मिलती है कि सावन में माता पार्वती अपने मायके आई थीं। वहां, उन्होंने अपने सखियों के साथ झूला लगाया और झूला भी। इस दौरान उन्होंने लोक गीत गाए और खुशियां मनाई। तभी से यह परंपरा चली आ रही है।

भगवान कृष्ण और राधा रानी से भी जुड़ी है मान्यता

सावन में झूला झूलने की परंपरा का संबंध भगवान श्रीकृष्ण और राधा रानी से भी जोड़ा जाता है। ऐसी मान्यता है कि सावन के सुहाने मौसम में भगवान कृष्ण ने राधा रानी को झूला झुलाया था। इसके बाद से कई जगहों पर मंदिरों में राधा-कृष्ण के लिए भी सुंदर झूले सजाए जाते हैं। सावन के दौरान कई मंदिरों में झूलन उत्सव भी मनाया जाता है।

सावन में मंदिरों में सजाए जाते हैं झूले

सावन में कई मंदिरों में भगवान और देवी-देवताओं के लिए भी झूले सजाए जाते हैं। फूलों और रंग-बिरंगी झालरों से इन झूलों को सुंदर बनाया जाता है। यह परंपरा कई राज्यों में आज भी पूरे उत्साह के साथ निभाई जाती है।

सावन में झूला झूलने का महत्व

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, सावन में झूला झूलना शुभ माना जाता है। कहा जाता है कि इससे परिवार में प्यार और एकता बनी रहती है। पति-पत्नी के रिश्ते में मधुरता आती है और माता पार्वती का आशीर्वाद मिलता है। वहीं, झूला झूलने से मन भी खुश रहता है और सावन के सुंदर मौसम का आनंद लेने का मौका मिलता है।

कहीं रोज-रोज का एक जैसा रूटीन आपके प्यार को फीका तो नहीं कर रहा?

लंबे रिश्तों में आने वाली बोरियत को दूर करने और प्यार को फिर से जगाने के लिए इस लेख में तरीके बताए गए हैं। रोजमर्रा के रूटीन में छोटे बदलाव और आपसी बातचीत से रिश्ते में नई जान डाली जा सकती है।

शुरुआती दिनों में देर रात तक बातें करना और एक-दूसरे को सरप्राइज देना, समय के साथ ये पीछे छूट जाता है। जब दो लोग शादी के पवित्र रिश्ते में बंधते हैं, तो अक्सर जिंदगी एक तय रूटीन पर चलने लगती है। सुबह उठना, ऑफिस जाना, घर लौटकर टीवी देखना और सो जाना।

यह रोज का एक जैसा रूटीन अनजाने में ही पार्टनर्स के बीच एक दूरी पैदा कर देता है। इसे ही रिश्ते में बोरियत बढ़ती है। अगर समय रहते इस रूटीन को बदला न जाए, तो प्यार का रंग धीरे-धीरे फीका पड़ने लगता है। जीवन में कुछ बदलाव जरूरी है। ऐसे में इनके बारे में पता होना जरूरी है। आज का हमारा लेख इसी विषय पर है। आज हम आपको अपने इस लेख के माध्यम से बताएंगे कि रिश्ते में क्यों आ जाती है बोरियत और इसे कैसे दूर करें?

रिश्ते में कैसे आती है बोरियत?

शुरुआत में जब कोई रिश्ता नया होता है, तो हर दिन एक नया मोड़ लेकर आता है, लेकिन जैसे-जैसे समय निकलता है, पार्टनर्स एक-दूसरे के साथ बहुत ज्यादा कंफर्टेबल हो जाते हैं। साथ ही रिश्ते में टेकन फॉर ग्रांटेड का भाव आने लगता है। घर की जिम्मेदारियां, पेरेंटिंग, ऑफिस स्ट्रेस और रोज के कामकाज जीवन पर इस कदर हावी हो जाते हैं कि दोनों पार्टनर्स के पास एक-दूसरे के लिए कुछ नया करने की एनर्जी ही नहीं बचती।

ऐसे में जब रिश्ते से सरप्राइज और एडवेंचर खत्म हो जाता है, तो वही पुराना रूटीन रिश्ते पर भारी पड़ने लगता है।

इस स्थिति से कैसे निपटें

- अगर आप भी इस बोरियत का सामना कर रहे हैं, तो पूरा रूटीन बदलने की जरूरत नहीं है। बस निम्न बदलाव करें-
- हफ्ते में कम से कम एक दिन ऐसा तय करें जब आप दोनों किसी नए कैफे में जाएं या घर पर ही साथ मिलकर खाना बनाएं।
- एडवेंचर के लिए हमेशा किसी बड़े वेकेशन या महंगे गिफ्ट की जरूरत नहीं होती। पार्टनर के जागने से पहले उनके लिए चाय बनाना, ऑफिस के बीच में एक छोटा सा 'आई मिस यू' का मैसेज भेजना या बिना किसी मौके के उनका पसंदीदा फूल लाकर देना खास महसूस करवाते हैं।

एक्सपर्ट की राय

कई बार पार्टनर्स मन ही मन उम्मीद करते हैं कि सामने वाला उनके लिए कुछ खास करे। अपनी इच्छाओं को खत्म करने के बजाय पार्टनर से खुलकर बात करें कि आप रिश्ते में क्या नयापन चाहते हैं।

फिर सीबीआई ऑफिसर बनकर लौटेंगे अरशद वारसी

श्वेता बसु प्रसाद की हुई एंट्री

अरशद वारसी की वेब सीरीज 'असुर' ने काफी पॉपुलैरिटी हासिल की है। सीरीज के दोनों सीजन को फैंस से काफी प्यार मिला है। अब इसके अगले सीजन को लेकर नया अपडेट सामने आया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक 'असुर 3' की शूटिंग इस साल सितंबर से शुरू होने वाली है। टीम ने नए सीजन की तैयारी भी शुरू कर दी है। बताया जा रहा है कि 'असुर' के क्रिएटर गौरव शुक्ला अब तीसरे सीजन में डायरेक्टर की कुर्सी संभालेंगे। पहले दो सीजन का निर्देशन ओनी सेन ने किया था। कास्ट की बात करें तो इस सीजन में एक नई एंट्री भी होने वाली है। रिपोर्ट्स के अनुसार, एक्ट्रेस श्वेता बसु प्रसाद 'असुर 3' का हिस्सा बन सकती हैं। इससे शो की कहानी और भी दिलचस्प होने की उम्मीद है।

'असुर' वेब सीरीज के बारे में

'असुर' का पहला सीजन 2020 में आया था, जिसमें अरशद वारसी और बरुन सोबती की जोड़ी को खूब पसंद किया गया। दूसरे सीजन के बाद से ही फैंस तीसरे पार्ट का इंतजार कर रहे थे। अब आखिरकार शो आगे बढ़ रहा है। अरशद वारसी ने भी पहले इस बात की पुष्टि की थी कि 'असुर 3' पर काम चल रहा है, हालांकि उन्होंने कहा था कि उन्होंने अभी स्क्रिप्ट नहीं पढ़ी है, लेकिन शो बनना तय है।

अरशद वारसी का वर्कफ्रंट

वर्क फ्रंट की बात करें तो अरशद वारसी हाल ही में 'धमाल 4' में नजर आए थे। आने वाले समय में वह 'गोलमाल 5' में भी दिखाई देंगे।

श्रेया कालरा ने ट्रोलर्स को लताड़ा, बोलीं- शो में मुझसे फायदा छीनकर किसी और को दे दिया गया

'लॉक अप 2' की विनर बनीं श्रेया कालरा की जीत पर दर्शक लगातार सवाल उठा रहे हैं। इस जीत को लेकर श्रेया को काफी आलोचनाओं का सामना करना पड़ रहा है। अब श्रेया ने सोशल मीडिया के जरिए अपने आलोचकों को कड़ा जवाब दिया है।

श्रेया ने किये यूजर्स से सवाल

श्रेया कालरा की जीत को कुछ दर्शक स्क्रिप्टेड और पक्षपातपूर्ण बता रहे हैं। हाल ही में इंस्टाग्राम के जरिए 'लॉक अप 2' की विजेता ने फैंस के सवालों का जवाब दिया। श्रेया ने जब प्रतियोगियों को वापस लाया गया तो लोगों ने शो को पक्षपाती क्यों नहीं कहा? जब उन्हें सीक्रिट रूम के रखा गया तब यह सवाल क्यों नहीं उठाया गया? शो में मुझसे फायदा छीनकर किसी और को दे दिया गया। इस तरह के सवाल शो में बाकि प्रतियोगियों के लिए क्यों नहीं उठाये गए?

श्रेया को इनाम में क्या मिला?

लॉकअप सीजन 2 के विजेता का खिताब जीतने के बाद श्रेया कालरा को पुरस्कार में एक चमचमाती ट्रॉफी मिली थी। इसके अलावा एक करोड़ रुपये की राशि भी उन्हें मिली। रिपोर्ट्स के मुताबिक, श्रेया कालरा मामूली अंतर से जीती थीं। उन्होंने शिवांगी जोशी को सात वोटों से हराया था। बता दें कि पांच फाइनलिस्ट चुने गए थे। फाइनल में राम कपूर, शिवांगी जोशी, श्रेया कालरा, योगेश रावत और आकांक्षा चमोला ने जगह बनाई थी।

फराह खान पर भी लगे पक्षपात के आरोप

इससे पहले निर्देशक फराह खान ने अपने व्लॉग में भी 'लॉक अप 2' में खुद पर लगे आरोपों पर बात की थी। उन्होंने कहा, ' शो होस्ट करने के दो हफ्ते बाद मुझे पता चला कि लोग कमेंट कर रहे हैं कि मैं पक्षपाती होस्ट हूं, क्यों? क्योंकि श्रेया और मेरी यूट्यूब कंपनी एक ही टीम के द्वारा चलाई जाती हैं। उस कंपनी के पास 70 कंटेंट क्रिएटर हैं, तो क्या? पता नहीं मैं पक्षपाती कैसे हो सकती हूं?'

द डिप्लोमैट के बाद फिर साथ काम करेंगे जॉन अब्राहम और शिवम नायर?

फिल्म 'द डिप्लोमैट' के बाद जॉन अब्राहम एक बार फिर शिवम नायर की फिल्म में नजर आने वाले हैं। ऐसी चर्चा है कि दोनों ने आगामी प्रोजेक्ट के लिए हाथ मिलाया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, दोनों जिस एक्शन थ्रिलर फिल्म पर काम कर रहे हैं, उसका अभी कोई नाम नहीं रखा गया है। इसमें दो मेल लीड होंगे। रिपोर्ट्स के मुताबिक जॉन की अगली फिल्म एक कमर्शियल एंटरटेनर होगी। इसे शिवम नायर के अब तक के सबसे मेनस्ट्रीम प्रोजेक्ट्स में से भी एक बताया जा रहा है। हालांकि, फिल्म की बाकी कास्ट और दूसरे हीरो को लेकर अभी कोई जानकारी नहीं है।

'मिर्जापुर द मूवी' पर बोले फरहान अख्तर;

जितेंद्र कुमार ने की ये गुजारिश

एक्टर-प्रोड्यूसर फरहान अख्तर ने 'मिर्जापुर' सीरीज को इतना प्यार देने के लिए फैंस का शुक्रिया अदा किया है। इसी प्यार की वजह से मेकर्स 'मिर्जापुर : द मूवी' बनाने के लिए प्रेरित हुए। 'मिर्जापुर : द मूवी' के ट्रेलर लॉन्च पर, प्रोड्यूसर फरहान अख्तर ने फिल्म की रिलीज डेट को लेकर दुनिया भर के फैंस के उत्साह का जिक्र किया। मीडिया से बात करते हुए फरहान ने कहा कि अपकमिंग फिल्म फैंस की मांग का नतीजा है। फरहान अख्तर ने कहा, 'यह शो फैंस के प्यार का नतीजा है। उन्होंने शो को तब से सपोर्ट किया है, जब यह पहली बार रिलीज हुआ था। अमेजन इसे दुनिया भर में ले गया। मैं जहां भी जाता था, लोग मुझसे पूछते थे, 'मिर्जापुर कब आ रहा है?' जब इसकी घोषणा हुई, तो लोग मुझसे रिलीज डेट पूछते थे, इसलिए असल में फैंस ने ही इस फिल्म की मांग की है। हम बहुत खुश और आभारी हैं कि हमने इसे ओरिजिनल कास्ट और शानदार नई कास्ट के साथ मिलकर बनाया है।'

क्या बोले जितेंद्र कुमार

वहीं जितेंद्र ने फैंस से एक गुजारिश की है। उन्होंने कहा 'बबलू भैया पर भी उतना ही प्यार बरसाएं, जितना उन्होंने 'पंचायत' में जीतू भैया पर बरसाया था, क्योंकि अब बबलू भैया की वापसी हो रही है।'

ट्रेलर में क्या है

मेकर्स ने आज 'मिर्जापुर : द मूवी' का ट्रेलर रिलीज कर दिया है। यह सीजन 1 को आगे बढ़ाता है और फ्रेंचाइजी के कुछ सबसे पसंदीदा और आइकॉनिक किरदारों- जैसे कालीन भैया, मुन्ना भैया और गुड्डू पंडित- को एक साथ लाता है।

फिल्म की स्टारकास्ट

फिल्म में पंकज त्रिपाठी, दिव्येंदु, अली फजल, जितेंद्र कुमार, रवि किशन, अभिषेक बनर्जी, रसिका दुगल, मोहित मलिक, शीबा चड्ढा, राजेश तैलंग, प्रमोद पाठक, श्रिया पिलगांवकर, हर्षिता शेखर गौड़, श्वेता त्रिपाठी, सोनल एस. चौहान, अनंगशा बिस्वास, शाजी चौधरी, सत्येंद्र सोनी, कुलभूषण खरबंदा और सुशांत सिंह अहम भूमिकाओं में हैं। यह फिल्म 4 सितंबर, 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।

सामंथा प्रेग्नेंसी में होस्ट करेंगी 'सेलिब्रिटी मास्टरशेफ तमिल'

शो 'सेलिब्रिटी मास्टरशेफ तमिल' में तमिल एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री के कुछ जाने-माने चेहरे शूटिंग से हटकर किचन में नजर आएंगे। वह मुश्किल कुकिंग चैलेंजेस का सामना करेंगे। इस शो का एक प्रोमो भी जारी किया गया, जिसमें सामंथा कहती हैं, 'हमारे शहर में, हम जो भी करते हैं, स्टाइल के साथ करते हैं, एकदम जबरदस्त अंदाज में, है ना? भले ही वह सिर्फ खाना बनाना ही क्यों न हो। फिल्मों में एक्शन 'कट' के साथ शुरू और खत्म होता है। लेकिन यहां असली एक्शन 'कट' के बाद ही शुरू होता है। चाहे शूट हो या किचन, जीतने के लिए हमेशा जुनून की जरूरत होती है।'

शो को लेकर उत्साहित हैं सामंथा?

शो के बारे में बात करते हुए सामंथा रूथ प्रभु ने कहा, 'मैं आखिरकार सबके साथ यह जानकारी शेयर करने के लिए बहुत उत्साहित हूं। सेलिब्रिटी मास्टरशेफ तमिल मेरे पहले किए गए किसी भी कामों से बिल्कुल अलग है। इसी वजह से इसे ना कहना नामुमकिन था। मैं इस बात के लिए सबसे ज्यादा उत्साहित हूं कि हमारे कुछ पसंदीदा तमिल सेलिब्रिटी किचन में कदम रखेंगे, रिस्क लेंगे, गलतियां करेंगे, खुद को हैरान करेंगे और उम्मीद से कहीं ज्यादा जुनून के साथ मुकाबला करेंगे। काश मैं आपको बता पाती कि कौन खाना बना रहा है, लेकिन उसमें मजा ही क्या है? मैं इंतजार नहीं कर सकती कि सब लोग उस अनुभव का आनंद लें।'

करियर फ्रंट पर क्या कर रही हैं सामंथा?

दो महीने पहले सामंथा की साउथ फिल्म 'मां इंटी बंगारम' रिलीज हुई थी। इस फिल्म को बॉक्स ऑफिस पर अच्छी सफलता मिली। इसके बाद ही सामंथा ने अपनी प्रेग्नेंसी की खबर फैंस के साथ साझा की। इन दिनों वह अपने प्रेग्नेंसी फेज को एंज्वॉय कर रही हैं, सोशल मीडिया पर बेबी बंप के साथ तस्वीरें शेयर करती हैं। इसके अलावा जल्द ही वह 'सेलिब्रिटी मास्टरशेफ तमिल' को होस्ट करती हुई नजर आएंगी।

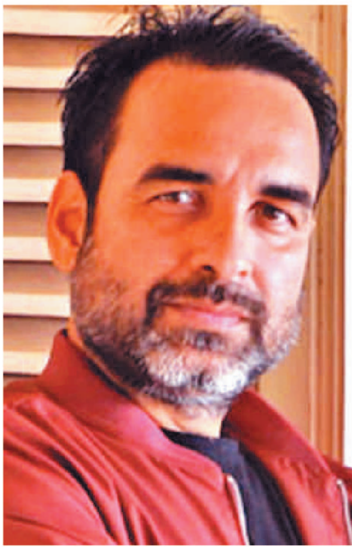

बिहार के गांव से निकला हूं, इसलिए आजादी को अलग तरह से देखता हूं

अभिनेता पंकज त्रिपाठी ने खास बातचीत में बताया है कि उनके हिसाब से आजादी का क्या मतलब है। उन्होंने यह भी बताया है कि आज का भारत कैसा होना चाहिए।

आखिर आजादी की असली परीक्षा कब होती है? जब कोई हमें रोक रहा हो या तब, जब कोई रोकने वाला ही न हो? पर अभिनेता पंकज त्रिपाठी के पास इसका अपना जवाब है। बिहार के एक छोटे से गांव से निकलकर देश के अलग-अलग हिस्सों में काम करने और लोगों से मिलने वाले पंकज ने भारत को कई रंगों में देखा है। मगर उनके लिए इन सारे रंगों के पीछे एक चीज हमेशा एक जैसी रही- अपनापन।

एक चीज जो हम सबको जोड़ती है

पंकज कहते हैं, 'मेरे हिसाब से पिछले 80 वर्षों में हमने सबसे अच्छी चीज अपनी विविधता और साथ रहने की भावना को बचाया है। भारत में इतनी भाषाएं हैं, इतनी संस्कृतियां हैं, इतने अलग-अलग तरह के लोग हैं, फिर भी एक भारतीय होने की भावना हम सबको जोड़ती है। मैं बिहार के एक छोटे से गांव से आता हूं, वहां से निकलकर देश के अलग-अलग हिस्सों में काम करने और लोगों से मिलने का मौका मिला। हर जगह मुझे भारत का एक अलग रंग दिखाई दिया, लेकिन उस रंग के पीछे एक अपनापन हमेशा एक जैसा लगा।'

कहीं हम समझना और सुनना कम न कर दें

पंकज आगे कहते हैं, 'आज हम तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। तकनीक हमारे जीवन का बड़ा हिस्सा बन गई है। मगर इसी भागदौड़ में कहीं ऐसा न हो कि हम एक-दूसरे को समझना और सुनना कम कर दें। अब मुझे लगता है कि हमें अपनी संवेदनशीलता और इंसानियत को बचाना बहुत जरूरी है। विकास बहुत जरूरी है, लेकिन विकास के साथ अगर संवेदना बची रहे, तो वही असली तरक्की है। मुझे लगता है कि आने वाली पीढ़ी के लिए हमें सिर्फ बेहतर सड़कें और बेहतर इमारतें नहीं, बल्कि एक बेहतर समाज भी छोड़कर जाना है।'

जानता हूं अवसर मिलने का क्या मतलब होता है

'मुझे आज के भारत की ऊर्जा और आत्मविश्वास पर बहुत गर्व होता है। खासकर हमारे युवाओं को देखकर। आज का युवा छोटे शहर या गांव से निकलकर दुनिया में अपनी पहचान बना रहा है। वह बड़े सपने देखने से डरता नहीं। मुझे यह बदलाव बहुत अच्छा लगता है, क्योंकि मैं खुद एक छोटे से गांव से आया हूं और जानता हूं कि अवसर मिलने का क्या मतलब होता है।'

बच्चे के सपनों की सीमा तय ना करें

बातों ही बातों में पंकज ने कई मुद्दों पर बात की। उन्होंने कहा, ऐसा लगता है कि हमें अभी समान अवसर और शिक्षा के मामले में बहुत आगे जाना है। मेरे लिए तरक्की का मतलब तभी पूरा होगा जब एक छोटे से गांव में रहने वाले बच्चे को भी यह महसूस हो कि उसके सपनों की कोई सीमा नहीं है। अगर प्रतिभा सिर्फ इसलिए पीछे रह जाए क्योंकि उसके पास संसाधन नहीं हैं, तो यह हमारे लिए सोचने की बात है। मैं चाहता हूं कि आने वाले वर्षों में हमारा भारत ऐसा हो, जहां किसी बच्चे का भविष्य इस बात से तय न हो कि वह किस घर में, किस शहर में या किस गांव में पैदा हुआ है। क्या है

आजादी का मतलब

'मेरे लिए आजादी का असली टेस्ट तब होता है जब आपको पूरी आजादी दी गई हो। जब कोई रोक रहा होता है, तब तो हमें पता होता है कि हमारे सामने एक दीवार है और हमें उससे लड़ना है। लेकिन जब कोई दीवार नहीं होती, कोई आपको नहीं रोक रहा होता, तब आप क्या चुनते हैं, वहीं आपकी असली आजादी और आपकी असली जिम्मेदारी सामने आती है।' मेरे लिए आजादी यह भी है कि मैं जो सही समझता हूं, उसकी जिम्मेदारी लेने की हिम्मत रखूं। मुझे अपने जीवन में भी यह महसूस हुआ है कि आजादी के साथ अनुशासन और जिम्मेदारी बहुत जरूरी हैं। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने जिस आजादी के लिए संघर्ष किया, वह सिर्फ अपने लिए जीने की आजादी नहीं थी। आज जब हमें इतनी आजादी मिली हुई है, तो हमें खुद से यह सवाल पूछना चाहिए कि हम इस आजादी का इस्तेमाल सिर्फ अपने लिए कर रहे हैं या अपने आसपास की दुनिया को थोड़ा बेहतर बनाने के लिए भी।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों में शत-प्रतिशत उपलब्धि के लिए कलेक्टर ने दिए निर्देश

100 प्रतिशत संस्थागत प्रसव, टीबी मुक्त ग्राम पंचायत एवं ब्लॉक और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच बढ़ाने पर जोर

नई दृष्टिबिंदु / खैरागढ़

कलेक्टर सह अध्यक्ष, जिला स्वास्थ्य समिति श्री इंद्रजीत सिंह चंद्रवाल की अध्यक्षता में जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिले में संचालित विभिन्न राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की गई। कलेक्टर महोदय ने सभी संस्था प्रभारियों को निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप शत-प्रतिशत उपलब्धि सुनिश्चित करने तथा कम प्रगति वाले इंडिकेटर्स में विशेष प्रयास कर सुधार लाने के निर्देश दिए। मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रम की समीक्षा के दौरान गर्भवती महिलाओं का पंजीयन (पी डब्ल्यू रजिस्ट्रेशन), एएनसी-1, एएनसी-4 एवं संस्थागत प्रसव में निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप प्रगति लाने के निर्देश दिए गए।

कलेक्टर ने स्पष्ट रूप से निर्देशित किया कि जिले में 100 प्रतिशत संस्थागत प्रसव सुनिश्चित किया जाए तथा घर पर होने वाले प्रसव को शून्य किया जाए। इसके लिए हाई रिस्क गर्भवती महिलाओं की पहचान, नियमित फॉलोअप तथा आवश्यकता अनुसार समय पर रेफरल सुनिश्चित करने पर विशेष ध्यान देने को कहा गया।

टीकाकरण एवं एच वी पी वैक्सीनेशन में तेजी : नियमित टीकाकरण कार्यक्रम में छूटे एवं ड्रॉपआउट बच्चों की पहचान कर उनका टीकाकरण पूर्ण कराने तथा निर्धारित कवरेज प्राप्त करने के निर्देश दिए गए। साथ ही पात्र किशोरियों में एचवीपी वैक्सीनेशन की प्रगति बढ़ाने तथा लाभार्थियों एवं अभिभावकों को इसके महत्व के संबंध में जागरूक करने पर जोर दिया गया।

मलेरिया, लेप्रोसी एवं नेशनल ओरल हेल्थ प्रोग्राम में शत-प्रतिशत उपलब्धि : कलेक्टर महोदय ने मलेरिया, लेप्रोसी तथा नेशनल ओरल हेल्थ प्रोग्राम की समीक्षा करते हुए निर्धारित लक्ष्यों की शत-प्रतिशत उपलब्धि प्राप्त करने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी संस्था प्रभारियों को कार्यक्रमवार लक्ष्य एवं उपलब्धि की नियमित समीक्षा करते हुए कम उपलब्धि वाले क्षेत्रों में विशेष रणनीति के साथ मैदानी गतिविधियां संचालित करने को कहा।

टीबी मुक्त ग्राम पंचायत एवं ब्लॉक के लिए इंडिकेटर आधारित प्लानिंग : टीबी मुक्त भारत अभियान की समीक्षा करते हुए जिले में टीबी मुक्त ग्राम पंचायत एवं टीबी मुक्त ब्लॉक के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए इंडिकेटर आधारित माइक्रो-प्लानिंग करने के निर्देश दिए गए। कलेक्टर ने कहा कि प्रत्येक ग्राम पंचायत एवं ब्लॉक स्तर पर निर्धारित इंडिकेटर्स के अनुसार कार्ययोजना तैयार कर टीबी स्क्रीनिंग, जांच, उपचार, कॉन्टैक्ट ट्रेसिंग, पोषण सहायता एवं फॉलोअप जैसी गतिविधियों को प्रभावी रूप से संचालित किया जाए।

पीएम-जनमन के अंतर्गत अधिक से अधिक ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण : पीएम-जनमन के अंतर्गत संचालित एमएमयू (मोबाइल मेडिकल यूनिट) की गतिविधियों की समीक्षा करते हुए कलेक्टर महोदय ने विशेष रूप से निर्देशित किया कि टटव टीम द्वारा दूरस्थ एवं वंचित क्षेत्रों में पहुंचकर विभिन्न रोगों की स्क्रीनिंग तथा अधिक से अधिक ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि दूरस्थ क्षेत्रों के ग्रामीणों को उनके गांव के समीप ही आवश्यक स्वास्थ्य जांच, चिकित्सा परामर्श, उपचार एवं अन्य आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जाएं। MMU टीम द्वारा नियमित रूप से निर्धारित क्षेत्रों में भ्रमण कर अधिक से अधिक पात्र ग्रामीणों को स्वास्थ्य सेवाओं से लाभान्वित करने के निर्देश दिए गए।

इंटीग्रेटेड डिसीज सर्विलांस प्रोग्राम की समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने विभिन्न रोगों एवं असामान्य स्वास्थ्य घटनाओं की जानकारी IDSP पोर्टल पर रियल टाइम में रिपोर्ट करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि समय पर सूचना एवं रिपोर्टिंग से संभावित रोग प्रकोप की शीघ्र पहचान कर तत्काल आवश्यक नियंत्रण एवं रोकथाम की कार्रवाई सुनिश्चित की जा सकेगी।

एनपी-एनसीडी में स्क्रीनिंग एवं फॉलोअप बढ़ाने के निर्देश : एनपी-एनसीडी कार्यक्रम के अंतर्गत उच्च रक्तचाप, मधुमेह सहित गैर-संचारी रोगों की स्क्रीनिंग, पहचान, पंजीयन, उपचार एवं नियमित फॉलोअप में तेजी लाने के निर्देश दिए गए। साथ ही निर्धारित कैंसर स्क्रीनिंग गतिविधियों में भी लक्ष्य के अनुरूप उपलब्धि सुनिश्चित करने को कहा गया। कलेक्टर ने सभी संस्था प्रभारियों को निर्देशित किया कि वे अपने-अपने संस्थानों में सभी राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों की नियमित समीक्षा एवं मॉनिटरिंग करें तथा जिन इंडिकेटर्स में अपेक्षित प्रगति नहीं हुई है, उनमें विशेष कार्ययोजना बनाकर सुधार सुनिश्चित करें।

उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य विभाग का उद्देश्य केवल लक्ष्य की पूर्ति तक सीमित न होकर गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना तथा जिले के स्वास्थ्य संकेतकों में वास्तविक सुधार लाना होना चाहिए। लक्षित कार्य अनुसार दायित्व निर्वहन नहीं करने पर संबंधित अधिकारी कर्मचारी पर अनुशासनात्मक कार्यवाही हेतु सचेत किया गया। एवं उत्कृष्ट कार्य करने पर सम्मानित किए जाने निर्देशित किया गया।

बैठक में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ आशीष शर्मा, जिला कार्यक्रम प्रबंधक श्रीमती सोनल ध्रुव, स्वास्थ्य विभाग के कार्यक्रम नोडल अधिकारी, बीएमओ, संस्था प्रभारी, बीईटीओ एवं संबंधित अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

खास खबर

शिशु संरक्षण माह का जिला स्तरीय शुभारंभ, 24 सितंबर तक चलेगा अभियान

नई दृष्टिबिंदु / कवर्धा

93 हजार से अधिक बच्चों को विटामिन-ए एवं 98 हजार से अधिक बच्चों को आयरन सिरप पिलाने का लक्ष्य

कलेक्टर गोपाल वर्मा के शिशु संरक्षण माह का जिला स्तरीय शुभारंभ 18 अगस्त को प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र रुसे में किया गया। कार्यक्रम में जनप्रतिनिधि एवं सरपंच दिलीप चंद्रवंशी ने बच्चों को विटामिन-ए एवं आयरन सिरप पिलाकर अभियान का शुभारंभ किया। शिशु संरक्षण माह का आयोजन 18 अगस्त से 24 सितंबर 2026 तक निर्धारित तिथियों में निर्धारित स्वास्थ्य एवं आंगनबाड़ी केन्द्रों में सत्र आयोजित कर किया जाएगा। अभियान के दौरान जिले में 9 माह से 5 वर्ष तक की आयु के 93,273 बच्चों को विटामिन-ए तथा 6 माह से 5 वर्ष तक की आयु के 98,759 बच्चों को आयरन-फोलिक एसिड सिरप पिलाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. डी.के. तुरे ने जिले के पालकों से अपील की है कि 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों में कुपोषणजनित बीमारियों एवं एनीमिया की रोकथाम के लिए निर्धारित तिथियों में अपने बच्चों को नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र अथवा आंगनबाड़ी केन्द्र में ले जाकर विटामिन-ए एवं आयरन सिरप अवश्य पिलाएं। उन्होंने बताया कि शिशु संरक्षण माह के माध्यम से 9 माह से 5 वर्ष तक के बच्चों को वर्ष में दो बार विटामिन-ए अनुपूरण तथा 6 माह से 5 वर्ष तक के बच्चों को सप्ताह में दो बार आई.एफ.ए. सिरप दिया जाता है। अभियान के अंतर्गत आयोजित सत्रों में बच्चों को विटामिन-ए की खुराक एवं आई.एफ.ए. सिरप देने के साथ-साथ छूटे हुए बच्चों का टीकाकरण, बच्चों का वजन एवं स्वास्थ्य जांच की जाएगी। साथ ही गंभीर कुपोषित बच्चों का चिन्हांकन कर उन्हें पोषण पुनर्वास केन्द्र भेजकर आवश्यक आहार एवं उपचार की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

जिला आर.एम.एन.सी.एच.ए. सलाहकार डॉ. मुकुंद राव ने उपस्थित पालकों को शिशु संरक्षण माह के उद्देश्य की जानकारी देते हुए बताया कि अभियान का उद्देश्य बच्चों को कुपोषण, एनीमिया एवं विटामिन-ए की कमी से बचाते हुए उनके स्वस्थ शारीरिक एवं मानसिक विकास को बढ़ावा देना है। उन्होंने बताया कि विटामिन-ए बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करने में सहायक है, जबकि आयरन-फोलिक एसिड बच्चों में एनीमिया की रोकथाम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने पालकों से अपील की कि निर्धारित तिथियों में अपने 5 वर्ष तक के बच्चों को नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र अथवा आंगनबाड़ी केन्द्र में ले जाकर अभियान का लाभ दिलाएं। शुभारंभ कार्यक्रम में सरपंच दिलीप चंद्रवंशी, जिला आर.एम.एन.सी.एच.ए. सलाहकार डॉ. मुकुंद राव, हेल्थ एजुकेटर शिवेंद्र कुमार देवांगन, प्रभारी चिकित्सा अधिकारी डॉ. जानकी शरण चंद्रवंशी, सेक्टर सुपरवाइजर, स्टॉफ नर्स, आर.एच.ओ., आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, मितानिन सहित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र रुसे की टीम उपस्थित रही।

सीएम हेल्पलाइन सहित शिकायत पोर्टलों में प्राप्त शिकायतों का प्राथमिकता से करें निराकरण – कलेक्टर

मोहला। कलेक्टर श्रीमती तुलिका प्रजापति ने कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में समय-सीमा की बैठक लेकर विभागीय कार्यों एवं योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने सीएम हेल्पलाइन, जनदर्शन, सीसीएमएस एवं अन्य शिकायत पोर्टलों में प्राप्त शिकायतों की विभागवार गहन समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि पोर्टलों में प्राप्त प्रत्येक आवेदन का परीक्षण कर निर्धारित समय-सीमा में गुणवत्तापूर्ण निराकरण सुनिश्चित करें। इसके लिए उन्होंने कार्यालय स्तर पर विशेष सेल गठित करने के निर्देश दिए, ताकि प्रत्येक प्रकरण की समयबद्ध मॉनिटरिंग एवं निराकरण सुनिश्चित किया जा सके। कलेक्टर ने नक्सल पुनर्वास नीति के अंतर्गत संचालित विभिन्न योजनाओं की विभागवार समीक्षा की।

कलेक्टर व पुलिस अधीक्षक ने ली जिला स्तरीय नारकोटिक्स कोऑर्डिनेशन समिति की बैठक

नशा मुक्त बेमेतरा बनाने, अवैध मादक पदार्थों की तस्करी रोकने दिए कड़े निर्देश

नई दृष्टिबिंदु / बेमेतरा

जिले को नशा मुक्त बनाने तथा अवैध मादक पदार्थों, शराब और नशीली दवाओं की तस्करी पर प्रभावी नियंत्रण के उद्देश्य से जिला स्तरीय नार्को कोऑर्डिनेशन समिति की बैठक कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता कलेक्टर सुश्री प्रतिष्ठा ममगाई एवं पुलिस अधीक्षक त्रिलोक बंसल ने की। बैठक में नशे के अवैध कारोबार पर प्रभावी अंकुश लगाने, युवाओं को नशे से दूर रखने तथा जन जागरूकता बढ़ाने को लेकर महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिए गए।

नशे के खिलाफ अपनाई जाएगी जीरो टॉलरेंस की नीति

कलेक्टर सुश्री प्रतिष्ठा ममगाई ने कहा कि नशा मुक्त भारत अभियान को जिले में जन आंदोलन का स्वरूप देना होगा। नशा व्यक्ति के साथ-साथ पूरे परिवार को प्रभावित करता है और समाज तथा युवा पीढ़ी के भविष्य के लिए गंभीर खतरा है। उन्होंने सभी संबंधित विभागों को आपसी समन्वय के साथ नशे के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाते हुए प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

अवैध शराब और मादक पदार्थों पर होगी कार्रवाई

बैठक में अवैध मादक पदार्थों की रोकथाम को लेकर आबकारी एवं पुलिस विभाग को संयुक्त रूप से कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए। अवैध शराब निर्माण एवं बिक्री तथा गांजा सहित अन्य मादक पदार्थों की तस्करी के संभावित ठिकानों पर नियमित रूप से छापेमारी करने और अंतर जिला सीमाओं पर सघन जांच एवं निगरानी बढ़ाने के निर्देश दिए गए।

स्कूल-कॉलेजों में चलेगा विशेष जागरूकता अभियान

शिक्षा विभाग के माध्यम से जिले के स्कूलों एवं कॉलेजों में नशे के दुष्प्रभावों को लेकर विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इनमें व्याख्यान, पोस्टर प्रतियोगिता, शपथ कार्यक्रम सहित विभिन्न गतिविधियां शामिल होंगी। विद्यालय परिसरों में नशा मुक्ति क्लब गठित करने पर भी जोर दिया गया, ताकि विद्यार्थियों को नशे के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक किया जा सके। स्वास्थ्य विभाग को जिले में संचालित नशा मुक्ति केंद्रों को और अधिक सक्रिय एवं प्रभावी बनाने के निर्देश दिए गए। नशे की लत से प्रभावित लोगों की पहचान कर उन्हें काउंसलिंग एवं उपचार के लिए प्रेरित करने को कहा गया। वहीं महिला एवं बाल विकास विभाग के माध्यम से आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं एवं परिवारों को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक किया जाएगा।

सोशल मीडिया और ऑनलाइन गतिविधियों पर भी निगरानी

नशीली दवाओं की ऑनलाइन बिक्री तथा सोशल मीडिया के माध्यम से नशीले पदार्थों के प्रचार-प्रसार पर भी कड़ी नजर रखने के निर्देश दिए गए। साइबर सेल को संदिग्ध ऑनलाइन गतिविधियों की निगरानी कर आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करने को कहा गया।

कलेक्टर सुश्री ममगाई ने कहा कि केवल प्रशासनिक कार्रवाई से नशे की समस्या का पूरी तरह समाधान संभव नहीं है। इसके लिए समाज के प्रत्येक वर्ग की भागीदारी जरूरी है। उन्होंने पंचायत प्रतिनिधियों, स्वयंसेवी संगठनों, युवाओं और आम नागरिकों से नशे के अवैध कारोबार की जानकारी तत्काल पुलिस या प्रशासन को देने की अपील की। उन्होंने बताया कि सूचना देने वाले व्यक्ति की पहचान गोपनीय रखी जाएगी।

पुलिस अधीक्षक त्रिलोक बंसल ने कहा कि जिले में नशे के अवैध कारोबार से जुड़े लोगों के खिलाफ कड़ी और प्रभावी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि नशे के कारोबार से अर्जित संपत्ति को चिन्हित कर उसे जब्त करने की प्रक्रिया भी शुरू की जाएगी। बैठक में संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे। अधिकारियों को दिए गए निदेर्शों का समयबद्ध एवं प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने कहा गया।

प्लास्टिक कचरा संग्रहित कर आय का स्रोत बना रहे पथर्रा के स्वच्छाग्रही

नई दृष्टिबिंदु / कबीरधाम

कबीरधाम जिले में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम-2026 के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए किए जा रहे प्रयासों का सकारात्मक परिणाम जनपद पंचायत कवर्धा अंतर्गत ग्राम पंचायत पथर्रा में देखने को मिल रहा है। यहां स्वच्छाग्रही घर-घर से सूखा कचरा, विशेषकर प्लास्टिक, बोतल एवं अन्य पुनर्चक्रण योग्य सामग्री एकत्रित कर उसका विक्रय कर रहे हैं। इससे गांव की स्वच्छता व्यवस्था मजबूत होने के साथ-साथ स्वच्छाग्रहियों के लिए आय का स्रोत भी तैयार हो रहा है। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी अभिषेक अग्रवाल ने कहा कि पथर्रा के स्वच्छाग्रही गांव में फैले प्लास्टिक कचरे को एकत्रित कर उसे आय के स्रोत में बदल रहे हैं। यह स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण की भावना के अनुरूप एक अनुकरणीय पहल है। उन्होंने बताया कि स्वच्छाग्रहियों द्वारा घर-घर से प्लास्टिक, बोतल एवं अन्य सूखा कचरा एकत्रित कर कबाड़ में विक्रय किया जा रहा है। इससे प्राप्त आय का उपयोग स्वच्छता संबंधी कार्यों में किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि ग्रामीणों द्वारा भी इस पहल में सक्रिय सहयोग किया जा रहा है। अब ग्रामीण अपना सूखा कचरा गांव में आने वाले कबाड़ी को देने के बजाय सीधे ग्राम के स्वच्छाग्रहियों को सौंप रहे हैं। इससे कचरे का उचित संग्रहण एवं प्रबंधन सुनिश्चित हो रहा है और गांव में स्वच्छता की स्थिति में भी लगातार सुधार हो रहा है।

ग्राम पंचायत पथर्रा में प्रत्येक घर में गीला, सूखा, सेनेटरी एवं विशेष कचरे के लिए चार अलग-अलग डिब्बे रखने के लिए ग्रामीणों को प्रेरित किया जा रहा है। स्वच्छाग्रही प्रतिदिन घर-घर पहुंचकर ग्रामीणों को कचरा पृथक्करण के महत्व की जानकारी दे रहे हैं। ग्रामीण भी प्लास्टिक, कागज, बोतल एवं अन्य सूखे कचरे को अलग रखकर स्वच्छाग्रहियों को उपलब्ध करा रहे हैं। एकत्रित प्लास्टिक एवं अन्य पुनर्चक्रण योग्य सामग्री के विक्रय से जहां पंचायत को आर्थिक लाभ मिल रहा है, वहीं कचरे के उचित प्रबंधन से गांव स्वच्छ और सुंदर बन रहा है। जिला पंचायत सीईओ अभिषेक अग्रवाल ने कहा कि कचरा अब समस्या नहीं, बल्कि समाधान और आय का माध्यम बन सकता है। यदि प्रत्येक ग्राम पंचायत पथर्रा की तरह प्लास्टिक एवं अन्य सूखे कचरे का संग्रहण कर उसके विक्रय की व्यवस्था सुनिश्चित करे, तो स्वच्छता के साथ पंचायतों को आर्थिक रूप से भी सशक्त बनाया जा सकता है। उन्होंने जिले के सभी जनपद पंचायतों से अपने-अपने क्षेत्रों में प्लास्टिक संग्रहण एवं विक्रय की व्यवस्था को प्रभावी बनाने की अपील की। साथ ही प्रत्येक ग्राम में महिला स्व-सहायता समूहों का चयन कर उन्हें कचरा संग्रहण एवं प्रबंधन की गतिविधियों से जोड़ने पर जोर दिया, ताकि ग्रामीण महिलाओं के लिए रोजगार एवं आय के नए अवसर भी उपलब्ध हो सकें।

नशा मुक्ति और फिटनेस का संदेश लेकर 30 किमी दौड़े डाक बम, हुआ भव्य स्वागत

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

पवित्र सावन मास के तीसरे सोमवार को जीवनदान सेवा संस्था द्वारा डाक कांवड़ यात्रा का आयोजन किया गया। संस्था के सदस्यों (डाक बम) ने मोहरा स्थित शिवनाथ नदी से पवित्र जल लेकर लगभग 30 किलोमीटर की पैदल दौड़ पूरी की और ग्राम छिपा स्थित प्रसिद्ध लोधेश्वर महादेव मंदिर पहुंचे। वहां महादेव का जलाभिषेक कर क्षेत्र की सुख-समृद्धि की कामना की गई।

यात्रा के ग्राम छिपा पहुंचने पर लोधी समाज के ओंकार भैया एवं ग्रामीणों की टीम ने डाक कांवड़ यात्रा का आत्मीय और भव्य स्वागत किया। इस दौरान कांवड़ियों के लिए फलाहार एवं विश्राम की विशेष व्यवस्था की गई थी। जीवनदान सेवा संस्था इस डाक कांवड़ यात्रा के जरिए केवल धार्मिक आस्था ही नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता का संदेश भी दे रही है। यात्रा के दौरान सदस्यों ने ग्रामीणों और युवाओं से नशापान से दूर रहने तथा शारीरिक फिटनेस पर ध्यान देने का आग्रह किया। संस्था के पदाधिकारियों का कहना है कि यदि युवा नशे से दूर रहकर स्वास्थ्य पर ध्यान देंगे तो आपराधिक घटनाओं में कमी आएगी और परिवार खुशहाल बनेगा। अभियान से लगातार युवा जुड़ रहे हैं, जिससे संस्था का उद्देश्य सफल होता नजर आ रहा है। डाक कांवड़ यात्रा का शुभारंभ विश्व हिंदू परिषद के जिला प्रमुख ओमप्रकाश अग्निहोत्री, हिंदू जागरण मंच के जिला संयोजक सुशील लड्ढा, राजबहादुर सिंह तथा ह्यूमन ग्रुप के सीईओ अमर सिंह राजपूत ने सीटी बजाकर किया।

संस्था द्वारा आगामी सावन के चौथे सोमवार को 45 किलोमीटर लंबी डाक कांवड़ यात्रा निकाली जाएगी। कांवड़िया मोहरा शिवनाथ नदी से जल लेकर प्रसिद्ध मां बम्लेश्वरी की पावन धरा डोंगरगढ़ के लिए प्रस्थान करेंगे। संस्था ने आमजनों से इस नशा मुक्ति अभियान और कांवड़ यात्रा में सहयोग करने की अपील की है। यात्रा के दौरान संस्था के सदस्यों सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

समीक्षा बैठक कलेक्टर ने पंचायत, पुलिस और पशुपालन विभाग की ली महत्वपूर्ण बैठक, दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए सड़क से मवेशियों को हटाए जाने के संबंध में दिए निर्देश

सड़कों पर मवेशी न दिखें, उठाएं सभी एहतियाती कदम: कलेक्टर वर्मा

नई दृष्टिबिंदु / कवर्धा

सड़कों पर रात के समय मवेशियों के कारण होने वाली दुर्घटनाओं की रोकथाम को लेकर कलेक्टर गोपाल वर्मा ने कलेक्ट्रेट में महत्वपूर्ण बैठक ली। कलेक्टर श्री वर्मा ने कहा कि सड़कों पर मवेशियों की मौजूदगी से दुर्घटना की संभावना बनी रहती है, जिससे जान-माल के नुकसान और पशुधन के लिए खतरे का अंदेशा रहता है। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि सड़कों पर मवेशी दिखाई नहीं दें, इसके लिए हर संभव कदम उठाए जाएं। बैठक में सीईओ जिला पंचायत अभिषेक अग्रवाल, एडिशनल एसपी अमित पटेल, सुखचैन चंद्रवंशी, अध्यक्ष जिला स्तरीय गौधाम समिति, प्रभारी उपसंचालक पशु चिकित्सा सेवायें डॉ. आशीष देवांगन, चारों विकासखंड के प्रभारी पशु चिकित्सा सहायक शल्यज्ञ, गौधाम संचालन समिति के प्रतिनिधि, ग्राम पंचायतों के सचिव एवं रोजगार सहायक उपस्थित रहे।

कलेक्टर श्री वर्मा ने बैठक में उपस्थित पंचायत सचिवों को निर्देश देते हुए कहा कि जिले के तीन प्रमुख मार्गों कवर्धा-रायपुर, कवर्धा-राजनांदगांव और कवर्धा-बोड़ला-चिल्फी मार्ग पर मवेशियों की मौजूदगी नहीं होनी चाहिए, इसके लिए जरूरी है कि सभी एहतियाती कदम उठाए जाएं। गांवों की ओर से प्रमुख सड़कों पर मवेशियों की आवाजाही न हो इसके गाँव स्तर पर व्यवस्था की जाए। इन प्रमुख मार्गों के किनारे गौ धाम का चिन्हांकन करते हुए घुमंतू पशुओं को वहां रखने की व्यवस्था करने के निर्देश दिए गए।

उन्होंने पशुपालन विभाग को आवश्यक समन्वय करते हुए गौ धाम में रखे जाने वाले पशुओं के लिए चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। साथ ही इन मार्गों के किनारे के प्रत्येक गांव में चरवाहे रखने और पशुओं की नियमित चराई करवाने के निर्देश भी दिए। पशुपालन विभाग को प्रमुख मार्गों पर लगातार निगरानी रखने के निर्देश दिए। चिकित्सीय सहायता के लिए पशुपालन विभाग को एम्बुलेंस की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए भी निर्देशित किया। उन्होंने नगर पालिका के माध्यम से काउ कैचर की व्यवस्था कर मवेशियों को गौ धाम में शिफ्ट करने के निर्देश दिए।

घुमंतू पशुओं के गले में बांधे जाएंगे रेडियम बेल्ट, जन सहयोग की अपील

कलेक्टर गोपाल वर्मा ने घुमंतू पशुओं के गले में अभियान चलाकर रेडियम बेल्ट बांधने के निर्देश विशेष रूप से दिए। उन्होंने कहा कि पशुओं की सुरक्षा के लिए सभी आवश्यक उपाय किए जाएं और रात के समय सड़क पर उनकी दृश्यता बढ़ाने के लिए रेडियम बेल्ट लगाए जाएं। इसके लिए पुलिस और पशुपालन विभाग को जनसहयोग से अभियान चलाने के निर्देश दिए गए। उन्होंने आमजन और समाजसेवी संस्थाओं से भी अपील की कि वे इस कार्य में सहयोग करें और सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए किए जा रहे प्रशासन के प्रयासों को मजबूती प्रदान करें।

धमतरी में जिले के खिलाड़ियों का जलवा, 16 पदक के साथ जीती टीम चैंपियनशिप

नई दृष्टिबिंदु / मोहला

धमतरी में आयोजित राज्य स्तरीय पावरलिफ्टिंग चैंपियनशिप में मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जिले के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए जिले का नाम रोशन किया। प्रतियोगिता में जिले की ओर से द फिटनेस पाठशाला जिम, अंबागढ़ चौकी से जुड़े 14 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। खिलाड़ियों ने अपनी मेहनत, अनुशासन और निरंतर अभ्यास के दम पर कुल 16 पदक अपने नाम किए, जिसमें 7 स्वर्ण, 8 रजत और 1 कांस्य पदक शामिल हैं। शानदार प्रदर्शन के आधार पर जिले की टीम ने टीम चैंपियनशिप अवॉर्ड पर भी कब्जा जमाया।

प्रतियोगिता में पंकज नेताम ने स्वर्ण पदक हासिल किया, जबकि खुशी धालेंद्र ने दो स्वर्ण पदक जीतने के साथ छत्तीसगढ़ जूनियर बेस्ट लिफ्टर का खिताब अपने नाम किया। रवि कुमार ने एक स्वर्ण तथा चिन्मय ने दो स्वर्ण पदक हासिल किए। वहीं साहिल निराला ने एक स्वर्ण और एक कांस्य पदक जीतकर जिले की पदक तालिका में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसके अलावा गजेंद्र, रेश्मी, रीत, डेजी, करण, सजल शिवहरे, बिलाल एवं निखिल पटवा ने शानदार प्रदर्शन करते हुए रजत पदक हासिल किए। जिले की युवा खिलाड़ी आनिया खान का स्कूल गेम्स वेटलिफ्टिंग में संभाग स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चयन हुआ है। उनकी यह उपलब्धि जिले में खेल प्रतिभाओं के लगातार उभरने का प्रमाण है। खिलाड़ियों की इस सफलता से जिले के खेल जगत में उत्साह का माहौल है और आने वाले समय में इन खिलाड़ियों से राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर और बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद की जा रही है।

"हमर पुलिस हमर गांव" अभियान के तहत ग्राम मुर्रा में चौपाल लगाकर ग्रामीणों को किया जागरूक

साइबर फ्रॉड, नशा मुक्ति, यातायात नियम और संदिग्ध गतिविधियों पर दी जानकारी

नई दृष्टिबिंदु / बेमेतरा

पुलिस अधीक्षक त्रिलोक बंसल के निर्देशन में जिले में सामुदायिक पुलिसिंग को बढ़ावा देने "हमर पुलिस हमर बजार" और "हमर पुलिस हमर गांव" अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में 18 अगस्त को थाना नांदघाट पुलिस टीम ने ग्राम मुर्रा पहुंचकर ग्रामीणों को अपराधों के प्रति सजग रहने का संदेश दिया।

ग्राम चौपाल लगाकर दी गई जानकारी

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ. हरीश यादव, एसडीओपी बेमेतरा भुषण एक्का और एसडीओपी बेरला रूचि वर्मा के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी नांदघाट निरीक्षक लेखराम ठाकुर, सहायक उप निरीक्षक मोहन लाल साहू और स्टाफ ने ग्राम मुर्रा में चौपाल लगाकर ग्रामीणों से सीधा संवाद किया। पुलिस ने ग्रामीणों को साइबर अपराध, चिटफंड, फर्जी कॉल और ठगी से बचाव के उपाय बताए।

बताया गया कि अपना आधार कार्ड संभालकर रखें और किसी अनजान व्यक्ति को आधार नंबर न बताएं। बैंक अधिकारी बनकर खाता की जानकारी मांगने पर कोई जानकारी न दें, क्योंकि बैंक फोन पर ऐसी जानकारी नहीं मांगता। शंका होने पर तुरंत बैंक से संपर्क करें।

साथ ही ATM कार्ड नंबर, CVV, OTP, पासवर्ड जैसी निजी जानकारी किसी को न देने की सलाह दी गई। साइबर फ्रॉड होने पर हेल्पलाइन 1930 या National Cyber Crime Reporting Portal पर शिकायत दर्ज कराने को कहा गया।

नशा मुक्ति और यातायात नियमों पर जोर

पुलिस ने नशे के दुष्प्रभावों की जानकारी देते हुए कहा कि नशा शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आर्थिक नुकसान पहुंचाता है। ग्रामीणों से नशे के खिलाफ सशक्त संदेश देने और दूसरों को जागरूक करने की अपील की गई। इसके साथ ही यातायात नियमों का पालन करने और दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट अनिवार्य रूप से पहनने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

अवैध अप्रवासियों पर दी सूचना

ग्रामीणों से अपील की गई कि बाहरी व्यक्ति को किराए पर मकान देने से पहले उसकी जानकारी थाने में जरूर दें। किसी अंजान व्यक्ति को गांव में ठहरने न दें। यदि कोई अवैध अप्रवासी बांग्लादेशी/रोहिंग्या घुसपैठिया या संदिग्ध व्यक्ति बाहर से आकर रुका हो तो इसकी तत्काल सूचना टोल फ्री नंबर 1800-233-1905 पर दें।

जिले भर में चल रहा अभियान : पुलिस अधीक्षक ने सभी थाना-चौकी प्रभारियों को ग्रामीण क्षेत्रों का भ्रमण कर जनता की समस्याएं सुनकर त्वरित समाधान करने के निर्देश दिए हैं। इसके तहत पुलिस टीम लगातार बाजार, गांव, स्कूल, कॉलेज और सामाजिक संगठनों में जाकर जागरूकता अभियान चला रही है।

नटराज डांस एंड फिटनेस एकेडमी में धूमधाम से मनाया गया सावन महोत्सव

गरिमा भारद्वाज बनीं 'नटराज क्वीन', सूर्यकला और टी. पद्मावती रहीं रनरअप

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

नटराज डांस एंड फिटनेस एकेडमी के तत्वावधान में रविवार की संध्या को सावन महोत्सव का भव्य आयोजन हर्ष और उल्लास के साथ किया गया। महिलाओं ने पारंपरिक वेशभूषा में कार्यक्रम में भाग लेकर सावन का माहौल जीवंत कर दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्या की देवी मां सरस्वती की वंदना और स्तुति गान के साथ किया गया।

नृत्य, गीत व स्पधाओं से गूंजा माहौल

उत्सव के दौरान एकेडमी की महिलाओं ने अपनी सांस्कृतिक प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इसमें समूह नृत्य, एकल नृत्य के साथ-साथ समूह गीत और एकल गीतों की संगीतमय प्रस्तुतियां दी गई। महिलाओं के मनोरंजन के लिए कई रोचक प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया, जिसमें उपस्थित सभी महिलाओं ने पूरे उत्साह के साथ हिस्सा लिया।

गरिमा भारद्वाज चुनी गई 'नटराज क्वीन'

कार्यक्रम के अंतिम चरण में महिलाओं ने रैंप वॉक कर आत्मविश्वास का परिचय दिया। निष्पक्ष वोटिंग प्रक्रिया के आधार पर 'नटराज क्वीन' का चयन किया गया। इस प्रतियोगिता में गरिमा भारद्वाज ने 'नटराज क्वीन' का खिताब अपने नाम किया। वहीं सूर्यकला प्रथम रनरअप और टी. पद्मावती द्वितीय रनरअप घोषित की गई। डॉ. पी. आर्निका विश्वास के मार्गदर्शन में हुआ आयोजन । सावन महोत्सव के सफल संचालन और भव्य आयोजन का उत्तरदायित्व एकेडमी की संचालिका एवं गुरु डॉ. पी. आर्निका विश्वास ने निभाया। उनके कुशल मार्गदर्शन में पूरा कार्यक्रम संपन्न हुआ।

उपराष्ट्रपति के 2 सितंबर को छग प्रवास की तैयारियां तेज

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

भारत के उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन के 2 सितंबर को प्रस्तावित छत्तीसगढ़ प्रवास की तैयारियों को लेकर मंगलवार को मंत्रालय महानदी भवन में राज्य स्तरीय बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता मुख्य सचिव विकासशील ने की। उपराष्ट्रपति 2 सितंबर को रायपुर स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान एम्स के दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे।

मुख्य सचिव ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि उपराष्ट्रपति के प्रवास के दौरान सभी व्यवस्थाएं निर्धारित प्रोटोकॉल और मिनट-टू-मिनट कार्यक्रम के अनुसार सुनिश्चित की जाएं। उन्होंने एयरपोर्ट से कार्यक्रम स्थल तक और वापसी के दौरान एंट्री-एग्जिट प्लान सहित समस्त व्यवस्थाओं को बेहतर समन्वय के साथ अंतिम रूप देने को कहा। रायपुर कलेक्टर को एयरपोर्ट पर स्वागत व्यवस्था, रिसेप्शन लाइन और एम्स में प्रोटोकॉल संबंधी तैयारियों के निर्देश दिए गए। एयरपोर्ट एवं कार्यक्रम स्थल पर पुलिस की समुचित तैनाती और सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए गए।

सुरक्षा, चिकित्सा व प्रकाश व्यवस्था पर विशेष फोकस

बैठक में सुरक्षा व्यवस्था के लिए गृह विभाग को आवश्यक कार्रवाई, ठहरने की व्यवस्था, प्रकाश एवं विद्युत व्यवस्था, चिकित्सा सुविधाएं और आकस्मिक चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए। मुख्य सचिव ने सभी विभागों को आपसी समन्वय से काम करने को कहा। कार्यक्रम की बैठक व्यवस्था भारत सरकार द्वारा निर्धारित प्रोटोकॉल और डायस प्लान के अनुसार करने को कहा गया। कार्यक्रम की शुरूआत में वंदे मातरम और राष्ट्रगान सहित सभी निर्धारित प्रोटोकॉल का पालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। एम्स प्रबंधन को भी दीक्षांत समारोह से संबंधित सभी व्यवस्थाओं को बेहतर ढंग से पूरा करने को कहा गया।

ये अधिकारी रहे उपस्थित

बैठक में गृह एवं जेल विभाग की प्रमुख सचिव श्रीमती निहारिका बारिक, सामान्य प्रशासन विभाग के सचिव अविनाश चंपावत, मुख्यमंत्री के सचिव मुकेश कुमार बंसल, रायपुर कमिश्नर श्याम धावड़े, सुशासन एवं अभिसरण विभाग के संयुक्त सचिव मयंक अग्रवाल, सामान्य प्रशासन विभाग की उप सचिव श्रीमती अंशिका पांडेय, कलेक्टर रायपुर, आईजी रायपुर, एम्स रायपुर के चिकित्सा अधिकारी सहित विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

गिनीज बुक में दर्ज श्री शिव महापुराण व महाभिषेक का भव्य आयोजन

छत्तीसगढ़ राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष डॉ. ममता साहू ने की पूजा-अर्चना, प्रदेशवासियों के लिए की सुख-शांति की कामना

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

शहर के परशुराम नगर, संतोषी पारा, पुरैना में गिनीज बुक में दर्ज श्री शिव महापुराण एवं महाभिषेक का पावन आयोजन श्रद्धा और उल्लास के साथ संपन्न हुआ।

इस भव्य आध्यात्मिक आयोजन में छत्तीसगढ़ राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष डॉ. ममता साहू विशेष रूप से शामिल हुई। उन्होंने विधि-विधान से पूजा-अर्चना कर प्रदेशवासियों के सुख, शांति एवं समृद्धि की कामना की।

महिला समिति और मोहल्लेवासियों ने किया आयोजन

इस आयोजन की आयोजक श्रीमती किरण साहू और पूज्य पंडित श्री कृष्ण चंद्र दुबे महाराज जी के सान्निध्य में गौर कल्पतरु महिला समिति एवं समस्त मोहल्लेवासियों द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान शिव महापुराण का पाठ और महाभिषेक किया गया। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लेकर भगवान शिव का आशीर्वाद प्राप्त किया। वातावरण भक्तिमय भजनों और जयकारों से गूंजता रहा। आयोजकों ने बताया कि यह आयोजन समाज में आध्यात्मिक चेतना और धार्मिक एकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया है।

"यह समाचार पत्र आलोक तिवारी द्वारा 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से आलोक तिवारी की ओर से प्रकाशित की जाती है, जिसका संपादन आलोक तिवारी द्वारा किया जाता है तथा इसका मुद्रण समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 पर किया जाता है। (समाचार चयन के लिए PRP Act, 2023 के तहत संपादक जिम्मेदार है)। समस्त विवादों का निपटारा न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।" संपादक आलोक तिवारी, मो. 74154-69100